ओ३म्

किताबुल्लाह

वेद या कुरान ?

लेखक :
राजवीर आर्य

॥ अथ गायत्री–मन्त्रः ॥

ओ३म् भुर्भुवः स्वः ।
तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि ।
धियो यो नः प्रचोदयात् ।

(यजु० 36 । 3), (ऋ० 3 । 62 । 10)

ओ३म् । हे प्राण-स्वरूप, दुःख-विनाशक और आनन्दस्वरूप भगवन् ! हम सब उस जगत् उत्पादक, वरण करने योग्य दिव्य गुणों से युक्त परमेश्वर का ध्यान करें अथवा अपनी आत्मा में धारण करें, जिससे कि वह परमेश्वर हमारी बुद्धियों को उत्तम कामों में प्रेरित करे ।

ओ३म्

किताबुल्लाह वेद या कुरान?

लेखक : राजवीर आर्य

पौष	२०६७
दयानन्दाब्द	१८७
सृष्टि-संवत्	१,९६,०८,५३,१११

© प्रकाशनाधिकार :
लेखक–स्वायत्तीकृतः
प्रथम संस्करण दिसम्बर २०१०

मूल्य - २० रुपये

किताबुल्लाह वेद या कुरान?

आर्ष मनीषा के प्रबल प्रहरी, प्राचीन ज्ञान-विज्ञान के उत्कृष्ट प्रस्तोता, महर्षि दयानन्द 'वेद' को सब सत्य विद्याओं का पुस्तक घोषित करते हैं और मुक्त कण्ठ से कहते हैं कि मेरा कोई नया सिद्धान्त नहीं है, अपितु सभी प्राचीन आर्य ऋषियों, मुनियों का जो मत है, वही मेरा मत है।

मन्त्रार्थ दृष्टा, महान् वैज्ञानिक, महर्षि दयानन्द ईश्वरीय कहे जाने वाले विभिन्न ग्रन्थों का अवलोकन कर निष्पक्ष तथा बुद्धिसंगत तर्क से सिद्ध करते हैं और सिद्धान्त रूप में कहते हैं कि जो प्राचीनतम ज्ञान है, केवल वही ईश्वरीय प्रेरणा से प्राप्त ज्ञान है तथा उत्तरोत्तर काल में ईश्वरीय पुस्तक के रूप में कल्पित सभी ग्रन्थ उसकी नकल मात्र हैं और मनुष्यकृत हैं।

महर्षि दयानन्द कहते हैं कि जैसे ईश्वर अनादि, नित्य है वैसे 'वेद भी अनादि नित्य है। जिस प्रकार ईश्वरीय व्यवस्था खण्डित व दूषित नहीं होती तथा निरन्तरता से अविरल अपना काम करती है, तथारूप 'वेद' भी हैं।

महर्षि दयानन्द के इस दृष्टिकोण से सभी मतमतान्तरों में हा-हाकार मच गया। जो उत्तरवर्ती मत अपने से पूर्ववर्ती मत को मन्सूख (निरस्त) घोषित करते थे, वो स्वयं महर्षि के तर्कानुसार मन्सूख की श्रेणी में खड़े हो गए।

प० चमूपति जी ''चौदहवी का चाँद'' में प्रश्न करते हैं कि जिस प्रक्रिया से नवीन मत अपने से प्राचीन मत को निरस्त करते हैं व स्वयं को अन्तिम व अखण्डनीय मानते हैं, यह कैसे सम्भव है?

प. चमूपति जी का प्रश्न है कि समय पाकर किसका स्वभाव बदला? किसने अनुभव से सीखा? ईश्वर ने या मनुष्य ने?

महर्षि दयानन्द का आग्रह और उद्योग सत्य-असत्य के विवेक हेतु ही रहा। महर्षि जी जब परिव्राजक रहे, उस समय उन्हें वेद के विषय में व्याप्त भ्रान्तियों का अनुभव हुआ। आर्यावर्त की दुरवस्था को उन्होंने जाना। आर्यजनों को वेदेतर मतों द्वारा पददलित होते देखा। परिव्राजक स्वामी ने सच्चे शिव की उपासना, उसके वेद-विज्ञान का पुनरुद्धार और देश-जाति के उद्धार एवं स्वतन्त्रता को समझा तथा अपना सर्वस्व उसमें होम कर दिया।

महर्षि ने प्राचीन परम्परा का अनुसरण करते हुए शास्त्रार्थों की शृंखला शुरू की। वेद के बारे में व्याप्त मिथ्यावाद को सत्यार्थ के प्रकाश से निवृत किया। कालजयी ग्रन्थ **सत्यार्थप्रकाश** व **ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका** इसी दुष्कर प्रयत्न का प्रसाद हैं।

महर्षि की कार्यशैली प्रथम वैदिक सिद्धान्तों का निरूपण तदनन्तर अन्य मतों की समीक्षा की रही है। इसी का उन्होंने अपने ग्रन्थों, विशेषतः सत्यार्थप्रकाश में भी निर्वाह किया है।

तेरहवाँ, चौदहवाँ समुल्लास किसने लिखा?

महर्षि के मन्तव्य को अन्यथा समझकर अन्य मतवालों ने आरम्भ से ही ऋषि और उनके ग्रन्थ, विशेषकर सत्यार्थप्रकाश के विरुद्ध विष-वमन किया है। इन्हीं कोलाहलों की पोषक पत्रिका 'कांति' के अप्रैल २००६ के अंक में 'गुलजार सहराई जी' ने अपने लेख में तेरहवें और चौदहवें समुल्लास को ऋषिकृत न मानकर, आर्यसमाजियों की शरारत माना है।

किन्तु महर्षि दयानन्द लिखते हैं :–

प्रमाण (१)–इस प्रकार के वेद हैं–अन्य बाईबिल, कुरान आदि पुस्तकें नहीं। इसकी स्पष्ट व्याख्या बाईबिल और कुरान प्रकरण में तेरहवें और चौदहवें समुल्लास में की जाएगी।

(सत्यार्थप्रकाश सप्तम समुल्लास, प्रसंग मुक्ति विषय)

प्रमाण (२)–जैनी (१२) बारहवें, ईसाई (१३) तेरहवें और

(१४) चौदहवें समुल्लास में मुसलमानों की मुक्ति आदि विषय विशेष कर लिखेंगे।

(सत्यार्थप्रकाश—नवम समुल्लास प्रसंग मुक्ति विषय)

प्रमाण (३)—इस ग्रन्थ का पूर्वार्द्ध इसी दसवें समुल्लास के साथ पूरा हो गया। इन समुल्लासों में विशेष खण्डन-मण्डन इसलिए नहीं लिखा कि जब तक मनुष्य सत्यासत्य के विचार में कुछ भी सामर्थ्य न बढ़ाते, तब तक स्थूल और सूक्ष्म खण्डनों के अभिप्राय को नहीं समझ सकते। इसलिए प्रथम सबको सत्य शिक्षा का उपदेश करके अब उत्तरार्द्ध अर्थात् जिसमें चार समुल्लास हैं, उसमें विशेष खण्डन-मण्डन लिखेंगे। इन चार में से प्रथम समुल्लास में आर्यवर्त्तीय मतमतान्तर, दूसरे में जैनियों के, तीसरे में ईसाइयों और चौथे में मुसलमानों के मतमतान्तरों के खण्डन-मण्डन के विषय में लिखेंगे और पश्चात् चौदहवें समुल्लास के अन्त में स्वमत भी दिखलाया जाएगा।

(सत्यार्थप्रकाश दशम समुल्लास)

महर्षि ने सत्यार्थप्रकाश की भूमिका तथा अनुभूमिका में भी इन समुल्लासों के विषय में स्पष्ट किया है। इन प्रमाणों के बाद भी, अगर कोई तेरहवें और चौदहवें समुल्लासों पर विवाद करता है, मिथ्या आरोप गढ़ता है, तो न्याय की दृष्टि में ऐसे व्यक्ति को जो कहा जाता है सो उसका वही नाम!!!

इसी शृंखला में एक लेख "विचारणीय प्रश्न" 'कांति' के मई २००६ के अंक में प्रकाशित हुआ। लेखक का नाम "अनवर जमाल"* है।

महर्षि दयानन्द की दार्शनिक दृष्टि, अनवर जमाल जी समझ नहीं पाए और महर्षि के प्रति कठोर शब्दों का प्रयोग अथवा दुरुपयोग कर बैठे। शायद ! सुन्नत का असर है। किन्तु हमने लेखकीय मर्यादाओं का अनुसरण करते हुए अनवर जी के आक्षेपों का विश्लेषण ऋषि के तर्कों और प्रमाणों से ही किया है। जो पाठकों के समक्ष, विवेकानुसार निर्णय के लिये प्रस्तुत है।

* **नोट**—"अनवर जमाल" ने "महर्षि दयानन्द ने क्या खोया क्या पाया?" नाम से पुस्तक भी लिखी है। विषय वस्तु समान है।

भाई अनवर जी और महर्षि दयानन्द

हमारे भाई अनवर जी का 'अपना' मत है कि महर्षि की योग्यता छठी कक्षा के विद्यार्थी से भी कम है। साथ ही आर्यसमाजियों को शायद ललकारा है और तर्क किया है कि स्वामी दयानन्द महर्षि कहलाने के योग्य भी नहीं थे।

आप आर्यसमाजियों पर अकारण लाल-पीले हुए हैं। जबकि योगी अरविन्द, महर्षि दयानन्द को, आधुनिक काल के वेद-वेदाङ्गों के विद्वानों में उच्चतम कोटि का मानते हैं। उनका मत है कि वर्तमान युग या इससे आगे जो भी वेदभाष्य होंगे, उसकी कसौटी महर्षि का वेदभाष्य होगा।

इसी प्रकार, सर सैयद अहमद भी महर्षि से अत्यधिक प्रभावित थे। सर सैयद का योगदान इस्लाम को क्या है, इससे तो आप परिचित होंगे? सर सैयद का ही सर्वप्रथम प्रयास था, कुरान की समीक्षा को महर्षि की समालोचना के अनुकूल करने का। महर्षि के प्रभाव के कारण उन्होंने कुरान की कई मान्यताओं को दरकिनार कर दिया था।

उनके इस पुष्कल प्रयास का परिणाम, काफ़िर की पदवी से हुआ और वो भी अरब से आयात की गयी। किन्तु आश्चर्य! आज के भारतीय मुस्लिम भाष्यकार, अपनी सुविधानुसार सर सैयद का ही अनुसरण कर रहे हैं।

कितने शोक की बात है, सर सैयद जैसा व्यक्तित्त्व, जिसके निकट महर्षि की योग्यता ईश्वरीय सन्देश उतरने की थी, उसी व्यक्ति को आप अमान्य करके महर्षि की योग्यता को कमतर आंक रहे हैं, आपका विवेक!

प्रत्येक व्यक्ति अपने कार्य व विचारों में स्वतन्त्र है। अतः हो सकता है आप सर सैयद से सहमत न हों। हमें कोई आपत्ति नहीं।

अब आपका जो दावा है कि महर्षि कक्षा ६ का विद्यार्थी जो जानता है, उसको भी नहीं जानते थे। सो भी आपका अपना मत है, जो केवल एकांगी व कम अध्ययन के कारण है। कैसे? आगे सिद्ध हो जाएगा।

महर्षि की शिक्षा गुरुकुल परम्परा से रही, स्कूल के उन्होंने दर्शन तक नहीं किये। इस तथ्य को जानते हुए भी आपने तुलनात्मक

विश्लेषण किया। हमारे मतानुसार इस तरह का तुलनात्मक व्यंग्य केवल संकुचित मानसिकता का परिचायक है। शेष आपका निर्णय। हम केवल आपको सत्य का प्रकाश दिखा सकते हैं, जो हम इस लेख के माध्यम से करेंगे।

सूर्य्यः स्थिरः अस्ति अथवा कक्षायां अहतिः वा?

अनवर जी ने सत्यार्थप्रकाश को व ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका को आक्षेप का विषय बनाया है। अतः हमने भी इन्हीं दो ग्रन्थों को उत्तर का विषय बनाना उचित समझा। यद्यपि महर्षि के अन्य ग्रन्थों में प्रमाण बहुलता में प्राप्त हैं।

लेख के अन्तिम चरण में कुरान की संक्षेप में परीक्षा करेंगें, क्योंकि 'वेद' के विकल्प रूप में अनवर जी ने कुरान को प्रस्तुत किया है।

महर्षि लिखते हैं –

(१) "सूर्य्य ....सब लोकों के साथ आकर्षण गुण से सह वर्तमान, अपनी परिधि में घूमता रहता है, किन्तु किसी लोक के चारों ओर नहीं घूमता।

(२) "जो लोग कहते हैं कि सूर्य्य घूमता और पृथिवी नहीं घूमती, वे सब अज्ञ हैं, क्योंकि जो ऐसा होता तो कई सहस्र वर्ष का दिन और रात होते अर्थात् सूर्य्य का नाम (ब्रध्नः) पृथिवी से लाखों गुना बड़ा और करोड़ों कोस दूर है।

(३) "जो सूर्य्य को स्थिर कहते हैं, वे भी ज्योतिर्विद्यावित् नहीं, क्योंकि यदि सूर्य्य न घूमता होता तो एक राशि स्थान से दूसरे राशि स्थान को प्राप्त नहीं होता और गुरु पदार्थ बिना घूमे आकाश में नियत स्थान पर कभी नहीं रह सकता।"

(४) "और जो जैनी कहते हैं कि पृथिवी घूमती नहीं, किन्तु नीचे-नीचे चली जाती है.........? जो नीचे चली जाती है तो चारों और वायु का चक्र न बनने से पृथिवी छिन्न-भिन्न होती और निम्न स्थलों में रहने वालों को वायु का स्पर्श नहीं होता। नीचे वालों को अधिक होता और एक-सी वायु की गति होती।"

(ये सभी प्रमाण सत्यार्थप्रकाश अष्टम समुल्लास से हैं)

(५) "(आयं गौः) गौ नाम है पृथिवी, सूर्य्य, चन्द्रमादि लोकों का। वे सब अपनी-अपनी परिधि में अन्तरिक्ष के मध्य में सदा घूमते रहते हैं........। इसी प्रकार सब लोक अपनी-अपनी कक्षा में सदा घूमते हैं।"

(६) "(या गौर्व०) जिस-जिस का नाम 'गौ' कह आये हैं, सो-सो लोक अपने-अपने मार्ग में घूमता और पृथिवी अपनी कक्षा में सूर्य्य के चारों ओर घूमती है अर्थात् परमेश्वर ने जिस-जिसके घूमने के लिये जो-जो मार्ग निष्कृत अर्थात् निश्चित किया है, उस-उस मार्ग में सब लोक घूमते हैं.......। तथा अपने-अपने घूमने के मार्ग में सब लोक सदा घूमते-घूमते नियम ही से प्राप्त हो रहे हैं।"

(७) "द्यौः नाम प्रकाश करने वाले सूर्य्य आदि लोक और जो प्रकाश रहित पृथिवी आदि लोक हैं, वे सब अपनी-अपनी कक्षा में सदा घूमते हैं। इससे सिद्ध हुआ कि सब लोक भ्रमण करते हैं।"

(संख्या (५-७), ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका, पृथिव्यादि लोक भ्रमण विषय)

(८) "(यदा ते०) हे इन्द्र, परमेश्वर !..............। इस कारण ये सब लोक अपनी-अपनी कक्षा और स्थान से चलायमान नहीं होते।"

(९) "दूसरा अर्थ—इन्द्र जो वायु ....। इस हेतु से सब लोक अपनी-अपनी ही कक्षा में चलते रहते हैं, इधर-उधर विचल* भी नहीं सकते।"

(१०) "(यदातेमारुती०) अभिप्राय........। जब इन प्रजाओं को आपके गुण नियम में रखते हैं, तभी भुवन अर्थात् सब लोक अपनी-अपनी कक्षा में घूमते और स्थान में बस रह हैं।"

(संख्या ८-१०), ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका, आकर्षणानुकर्षणविषय

मान्य अनवर जी सत्यार्थप्रकाश के अष्टम समुल्लास में 'सूर्य्य घूमता है व नहीं' इस प्रकरण को ठीक से समझ नहीं पाए तथा उत्तर पक्ष में महर्षि दयानन्द जी ने जो हमने संख्या तीन में उद्धृत किया है, उसको बिसरा बैठे (कुरानीय विज्ञान का चमत्कार है) और इस्लामी इल्म के जोश में अपनी समीक्षा में लिखते हैं—"तुम्हें जानकर बड़ा आश्चर्य

* विचल—परिधि से हटकर गति।

होगा कि हमारा सूर्य्य बड़ी तेजी से चक्कर लगाते हुए लगभग २६ करोड़ वर्ष में अपनी आकाश गंगा की एक परिक्रमा पूरी करता है।" आप इससे आगे लिखते हैं-"जो बात कक्षा ६ का विद्यार्थी जानता है, क्या उसे ईश्वर न जानता होगा? तब उसने अपनी वाणी **वेद** में ऐसी बात क्यों कहीं?"

अनवर जमाल जी! यह आपकी बड़ी भूल है, जो आपने सूर्य्य को हमारा कहा, यह तो ईश्वर का है। इस पर आपका या हमारा क्या अधिकार। क्या! आपने शिर्क तो नहीं किया? कौन-सा?? ये आप देखें। तौबा कर लीजिए। माफ हो जाएगा।

अब आपका जो प्रश्न है कि वेद में ईश्वर ने ऐसा क्यों नहीं कहा कि सूर्य्य २६ करोड़ वर्ष में आकाश गंगा का चक्कर लगाता है? तो जनाब! वेद में सम्पूर्ण सृष्टि विषयक, मनुष्यों के लाभार्थ, जहाँ भी ब्रह्माण्ड में मनुष्य सृष्टि है, सभी आवश्यक ज्ञान ईश्वर ने उपस्थित किया है।

ये तो आप भी जानते होंगे कि इस सृष्टि में असंख्य सूर्य्य हैं, जो भिन्न-२ गति से अपनी-२ कक्षा में सृष्टि के मध्य घूम रहे हैं। अतः वेद इन सभी सूर्य्य व अन्य लोकों के विषय में निर्देश करता है, न कि केवल एक सूर्य्य के विषय में, जिसको आप 'हमारा' कहकर सम्बोधित कर रहे हैं।

यथा महर्षि ने भी वेद का प्रमाण देते हुए स्पष्ट किया है कि सूर्य्य आदि लोक अपनी-अपनी कक्षा में घूमते हैं। इस हेतु हमने महर्षि के कुछ प्रमाण, संख्या (१) से (११) तक आपके समक्ष रखे हैं।

इन प्रमाणों से स्पष्ट है कि सूर्य्य किसी लोक की परिक्रमा नहीं कर रहा, अपितु सृष्टि के मध्य अपनी कक्षा में घूम रहा है। आप भी यही मान रहे हैं कि सूर्य्य आकाश गंगा के मध्य २६ करोड़ वर्ष में अपनी कक्षा में घूमता है। शंका क्या है? आक्षेप क्यों? अनवर जी बताओगे?

अनवर भाई! आपने तो वेद पर अनर्थक आक्षेप करने में कोई कोर-कसर नहीं छोड़ी, किन्तु कुराने पाक में विज्ञान की इस पाकिज़गी के हरूफ का ब्यौरा तो कम-से-कम फरमा देते। लेकिन क्या करें! अक्ल

के घोड़े दौड़ाने के बाद भी शायद कुरान के पाक पन्नों में कुछ नहीं मिला होगा?

वसु क्या, मनुष्य सृष्टि कहाँ रहती है, वसुओं पर कौन बसते हैं?

उपरोक्त विषय में महर्षि के सिद्धान्त वाक्यों को अवलोकनार्थ प्रस्तुत करते हैं, तदनन्तर अनवर जी के आक्षेप परखेंगे।

(१२) "उनमें से आठ वसु ये हैं—अग्नि, पृथिवी, वायु, अन्तरिक्ष, आदित्य, द्यौः चन्द्रमा और नक्षत्र (आदित्य का अर्थ सूर्य्यलोक और उसका प्रकाश द्यौः कहलाता है।) इनका वसु नाम इस कारण है कि **सब पदार्थ इन्हीं में बसते हैं** और सबके निवास करने के स्थान हैं।"
(ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका—वेदविषय विचार)

(१३) "इसी प्रकार सब लोकों के कारण रूप सामर्थ्य से परमेश्वर ने सब लोक और उनमें बसने वाले सब पदार्थों को उत्पन्न किया है।"
(ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका—सृष्टिविघाविषय)

(१४) "अग्नि और परमेश्वर (सोमनस्य दाता) आरोग्य आनन्द और वसु अर्थात् धन का देने वाला है। इसी से परमेश्वर (वसुदानः) अर्थात् अन्नदाता प्रसिद्ध है।" (ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका—पञ्चमहायज्ञविषयः)

(१५) "पिताओं का नाम वसु है, क्योंकि वे सब विद्याओं में वास करने के लिये योग्य होते हैं। ऐसे पितामहों का नाम रूद्र है, क्योंकि वे वसुसंज्ञक पितरों से दूनी अथवा शतगुणी विद्या और बल वाले होते हैं तथा प्रपितामहों का नाम आदित्य हैं, क्योंकि वे सब विद्याओं और सब गुणों में सूर्य्य के समान प्रकाशमान होके, सब विद्या और लोगों को प्रकाशमान करते हैं। इन तीनों का नाम वसु, रूद्र और आदित्य इसलिये है कि वे किसी प्रकार की दुप्टता मनुष्यों में रहने नहीं देते।"
(ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका-पञ्चमहायज्ञविषय)

(१६) "(कः स्वि०) इस मन्त्र में चार प्रश्न हैं। उनके बीच में से पहिला (प्रश्न) कौन एकाकी अर्थात् अकेला विचरता है और अपने प्रकाश से प्रकाशवाला है? (दूसरा) कौन दूसरे के प्रकाश से प्रकाशित होता है? (तीसरा) शीत का औपध क्या है? और (चौथा) कौन बड़ा क्षेत्र अर्थात् स्थूल पदार्थ रखने का स्थान है?।।३।।

इन चार प्रश्नों का क्रम से उत्तर देते हैं—(सूर्य्य एकाकी०) (१) इस प्रकार में सूर्य्य ही एकाकी अर्थात् अकेला विचरता है और अपनी ही कील पर घूमता है तथा प्रकाश स्वरूप होकर सब लोकों का प्रकाश करने वाला है। (२) उसी सूर्य्य के प्रकाश से चन्द्रमा प्रकाशित होता है। (३) शीत का औषध अग्नि है। (५) और चौथा यह है—पृथिवी साकार चीजों के रखने का स्थान तथा सब बीज बोने का बड़ा खेत है।"

(ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका, प्रकाश्यप्रकाशक विषयः)

(१७) "जिसके ६वाँ सूर्य्य, चन्द्र और दूसरे को तीसरा हो, उन दोनों को ज्येष्ठ महीने में विना जूते पहने तपी हुई भूमि पर चलाओ। जिस पर प्रसन्न हैं उसके पग, शरीर न जलने और जिस पर क्रोधित हैं, उनके जल जाने चाहिएं.........।"

(१८) "जो ठेका लिया हो तो सूर्यादि को अपने घर में बुलाके जल मरो।"

(क्रम सं० १७-१८, सत्यार्थप्रकाश—एकादश समुल्लास-विषय ग्रहफल-समीक्षा)

(१६) "और सूर्य्य को भी उत्पन्न न करता, क्योंकि इनमें क्रोडान् क्रोड़ जीव तुम्हारे मताऽनुसार करते ही होंगे। जव वे विद्यमान थे और तुम जिनको ईश्वर मानते हो, उन्होंने दयाकर सूर्य्य का ताप और मेघ को वन्ध क्यों न किया?"

(सत्यार्थप्रकाश द्वादश समुल्लास विषय जैन साधुओं का लक्षण)

अनवर जमाल जी, आप न तो **वसु क्या हैं** और **न सृष्टि के प्रयोजन** को समझ पाए। अतः सत्यार्थप्रकाश अष्टम समुल्लास के इस प्रसंग पर—

प्रश्न—सूर्य्य, चन्द्र और तारे क्या वस्तु हैं और उनमें मनुष्यादि सृष्टि है वा नहीं?

उत्तर—ये सब भूगोल लोक हैं और इसमें मनुष्यादि प्रजा भी रहती है, क्योंकि —

एतेषु हीदःसर्वं वसुहितमेते हीदः सर्वं वासयन्ते
तद्यदिदः सर्वं वासयन्ते तस्माद्वसव इति।। शत०का० १४

पृथिवी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, चन्द्र, नक्षत्र और सूर्य्य इनका वसु नाम इसलिए है कि इन्हीं में सब पदार्थ और प्रजा बसती है और ये ही सबको बसाते हैं। इसलिए वास के निवास करने के घर हैं इसलिए इनका नाम वसु है। जब पृथिवी के समान सूर्य्य, चन्द्र और नक्षत्र वसु हैं, पश्चात् उनमें इसी प्रकार प्रजा के होने में क्या सन्देह है? और जैसे परमेश्वर का यह छोटा-सा लोक मनुष्यादि सृष्टि से भरा हुआ है, तो क्या ये सब लोक शून्य होंगे? परमेश्वर का कोई काम निष्प्रयोजन नहीं होता, तो क्या इतने असंख्य लोकों में मनुष्यादि सृष्टि न हो तो सफल कभी हो सकता है? इसलिए सर्वत्र मनुष्यादि सृष्टि है।''

आप अपनी समीक्षा में लिखते हैं—''उपरोक्त बातों को देखकर पता चलता है कि वास्तविक वेद अर्थात् ब्रह्म निज ज्ञान का लोप हो चुका है या उसमें क्षेपक हो गया है क्योंकि सूर्य्य, चन्द्रमा और ज्ञात तारों पर अभी तक मनुष्य तो क्या किसी भी प्रकार का जीवन नहीं मिला है।''

अगले पैराग्राफ में आप प्रश्न करते हैं ''क्या परमेश्वर को दयानन्द जी के मतानुसार असफल मान लिया जाए? अथवा स्वयं दयानन्द जी को ही परमेश्वर के सृष्टि रचने के उद्देश्य को जानने में असफल मान लिया जाए?''

अनवर जमाल जी, आपको क्या मानना है, इसमें आप स्वतंत्र हैं। हम तो सच का आईना ही आपको दिखा सकते हैं। चलिए आपने कहाँ भूल की, समझाते हैं —

आपसे निवेदन है, जितने प्रमाण वसु के सम्बन्ध में यहाँ उद्धृत किये हैं, उन्हें ध्यान से पढ़िये। वसु को महर्षि ने क्या कहा है? समझिये!!! आप अकारण ही, सत्यार्थप्रकाश के प्रकरण को न समझ कर अनर्गल कह गये। ऋषि ने प्रश्न मनुष्यादि सृष्टि का उठाया था न कि केवल मनुष्य जीवन का, इस कारण ऋषि ने उत्तर भी उसी के सापेक्ष दिया है।

अब रहा प्रश्न इन वसुओं पर जीवन का, तो कृपा कर प्रमाण संख्या (१६) (१७) (१८) (१६) और (२६) को मनायोग से पढ़ें।

प्रमाण (१६) में पृथिवी को सब बीज बोने का स्थान व खेत कहा है। वहीं प्रमाण संख्या (१७) (१८) (१६) और (२६) में साकार वस्तुओं पर सूर्य्य का प्रभाव बताया (प्रमाण संख्या (२६) आगे है, कृपया वहाँ पढ़ें। अतः अनवर जमाल जी जीवन का मूल बीज होता है तथा जीवन निर्वाह का मूल खेती होता है। जहाँ ये सब सम्भव है वो पृथिवी कहलाती है।

महर्षि वेद का प्रमाण उद्धृत करते हुए कहते हैं कि पृथिवी साकार वस्तु रखने का स्थान है। अनवर भाई, इस सृष्टि में अनेकों पृथिवीयाँ हैं, ये सब जीवन के बीज बोने का स्थान हैं तथा जीवन-निर्वाह करने के लिए खेत हैं। अतः जहाँ भी जीवन है, वो पृथिवी है या जहाँ भी पृथिवी है, वहाँ जीवन है।

सो आपका तर्क **कहीं जीवन नहीं हो सकता,** केवल उपहास का विषय है। आज का वैज्ञानिक भी मानता है कि इस सृष्टि में पृथिवी के सदृश अनेकों लोक हैं, जहाँ जीवन हो सकता है।

आपके द्वारा उद्धृत प्रसंग में ऋषि का प्रश्न सृष्टि का था, न कि केवल मनुष्य जीवन का? परन्तु आपने तिल का ताड़ बना दिया। प्रश्न दार्शनिक है, कुरानीय गैब* का नहीं, न समझ में आए तो पूछ लेना।

(२०) "सब प्राणियों की पृथिवी और विद्या माता के समान सब प्रकार के मान्य कराने वाली और सूर्य्यलोक पृथिवी के पदार्थ का प्रकाशक और विज्ञानदान से, पण्डित तथा परमात्मा सबका पालन करने वाला है। इन्हीं दोनों कारणों से विद्वान् लोग जीवों को नाना प्रकार का सुख प्राप्त करा देते हैं।"

(ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका : भाष्यकरणशङ्कासमाधानादिविषय)

(२१) "(पुनर्नो असु पृथिवी ददातु पु०) हे सर्वशक्तिमान्! आपके अनुग्रह से हमारे लिये बारंबार पृथिवी प्राण को, प्रकाश चक्षु को और अन्तरिक्ष स्थानादि अवकाशों को देते रहें।"

(ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका : पुर्नजन्मविषय)

जीवन और पृथिवीयों का सम्बन्ध उपरोक्त प्रमाण संख्या (२०) और (२१) से भी स्पष्ट है। हमारा प्रयास महर्षि द्वारा उद्धृत प्रमाणों से

* गैब का अर्थ रहस्य अथवा जो जाना न जा सके।

आपके आक्षेप का उत्तर देना था। अतः हमने महर्षि के कुछ प्रमाणों से आपके दो आक्षेपों का निराकरण कर दिया।

ज्यादा जानने की इच्छा हो तो महर्षि दयानन्द के ग्रन्थों का अद्योपान्त, मनोयोगपूर्वक, शान्तचित्त से अध्ययन कीजिये। शंका का निवारण होगा। प्रमाणों की बहुलता उपस्थित होगी। हृदय में ज्ञान का प्रकाश होगा। वेद के प्रति आस्था बढ़ेगी। अस्तु!!

अब अगले विषय पर चलते हैं।

चन्द्रमा कुत्र अस्ति?

भाई अनवर जी (२) नम्बर प्रमाण का अवलोकन करिये, तब आगे पढ़ना –

(२२) "इसलिये एक भूमि के पास एक चन्द्र और अनेक चन्द्र अनेक भूमियों के मध्य में एक सूर्य्य रहता है।"

(सत्यार्थप्रकाश अष्टम समुल्लास विषय अन्य लोकों में सृष्टि)

(२३) "(सत्येनो०) इन मन्त्रों में यही विषय और उनका यही प्रयोजन है कि लोक दो प्रकार के होते हैं – एक तो प्रकाश करने वाले और दूसरे वे जो प्रकाश किये जाते हैं।

(ऋग्वेदादिभाष्य भूमिकाः प्रकाश्यप्रकाशकविषय)

महर्षि ने आगे, इसी प्रकरण में कौन प्रकाश का कारण है व कौन उस कारण से प्रकाशित होता है। स्पष्ट किया है। सो, भ्राता जी ! ध्यान से इस विषय को ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में पढ़ लेना।

भाई, अनवर जमाल जी! हमने प्र० न० (१२) में वसु का प्रकरण दिया है–वहाँ नक्षत्र को पृथिवी, सूर्य्य, चन्द्र आदि से अलग गिना है और जो आपने अष्टम समुल्लास (सत्यार्थप्रकाश) का प्रसंग आक्षेप के लिये चुना है, वहाँ भी नक्षत्र अलग गिना है।

अतः आपका निम्न आक्षेप –

"........इसलिए ईश्वर ने नक्षत्र लोकों के समीप चन्द्रमा को स्थापित किया।" (ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका पृष्ठ (१०७)) तथा समीक्षा

"स्वामी जी ने धरती पर खड़े होकर चन्द्रमा को देखा। वह उन्हें नक्षत्रों के समीप मालूम हुआ वर्ना वास्तव में तो वह नक्षत्रों से बहुत दूर स्थित है।

केवल मिथ्या आरोप है। अनवर जी प्रमाण संख्या (२२) को पढ़कर तथा महर्षि के लिखे इस वाक्य को जो आपने-अपने आक्षेप में उद्धृत किया है, बतायें क्या गलत है? क्या पृथिवी से अलग अन्य नक्षत्रों के अपने चन्द्र नहीं हैं? अगर हैं, तो फिर ये विष-वमन कैसा ? और आपका अन्य मत है तो खगोल विद्या का पुनः अध्ययन करिये! शनि, गुरु आदि सबके अपने चन्द्र हैं।

नक्षत्रों के क्या-क्या स्थान हैं और किन-किन को वैदिक वाङ्मय में नक्षत्र माना है, वो यहाँ प्रासंगिक नहीं था, सो हमने उसको छोड़ दिया।

अनवर जमाल जी का अधकचरा खगोल विज्ञान –

भाई अनवर जमाल जी लिखते हैं –

"आकाश में सर्दी-गर्मी होती है, सर्दी में परमाणु जम जाते हैं, भाप से मिलकर किरण बलशाली होती है।

..........क्योंकि आकाश के जिस देश में सूर्य्य के प्रकाश को पृथिवी की छाया रोकती है, उस देश में शीत भी अधिक होती है।......फिर गर्मी के कम होने और शीतलता के अधिक होने से सब मूर्तिमान् पदार्थों के परमाणु जम जाते हैं उनको जमने से पुष्टि होती है और जब उनके बीच में सूर्य्य की तेजोरूप किरणें पड़ती हैं तो उनमें से भाप उठती है। उनके योग से किरण भी बलवाली होती है।"

(ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका,
अथ प्रकाश्य प्रकाशक विषय संक्षिप्त)

समीक्षा–सूर्य्य के प्रकाश को पृथ्वी की छाया के रोकने से सर्दी नहीं होती, बल्कि जब सूर्य्य की परिक्रमा करते हुए पृथ्वी सूर्य्य से अपेक्षाकृत दूर हो जाती है तब सर्दी होती है और वह भी धरती पर होती है, आकाश में नहीं।

न तो परमाणु जमते हैं और न ही सूर्य्य की किरणों से उनमें भाफ (भाप) उठती है और न ही इस क्रिया से किरण बलशाली होती हैं। यह सृष्टि नियम के विरुद्ध है।"

अनवर जमाल जी के इस छठी कक्षा के ज्ञान के सन्दर्भ में हम कुछ कहें, प्रथम ऋषि क्या कहते हैं वो देख लें–

(२४) "क्योंकि अग्नि का यही स्वभाव है कि वह (वृक्ष, औषधि, वनस्पति तथा जलादि) पदार्थों में प्रवेश करके उनको भिन्न-भिन्न कर देता है। फिर वे हलके होके वायु के साथ ऊपर आकाश में चढ़ जाते हैं। उनमें जितना जल का अंश है, वह भाप कहाता है और जो शुष्क है, वह पृथ्वी का भाग है। इन दोनों के योग का नाम धूम है। वे परमाणु मेघमण्डल में वायु के आधार से रहते हैं। फिर वे परस्पर मिलके बादल होके उनसे वृष्टि, वृष्टि..........।" (ऋग्वेदादि.........वेदविषय-विचार)

अतः 'भाफ' का अर्थ महर्षि के अनुसार "जल का अंश है"। जिसे अंग्रेजी में Vapours कहते हैं, तथा जमने की प्रक्रिया परमाणुओं का अत्यधिक समीप आना या परस्पर मिलना है (सांकेतिक रूप में योग)। अनवर जी, यहाँ परमाणुओं का लय मत मान लेना, ऋषि ने लय या विलय नहीं माना है। न समझ पाओ तो पूछ लेना और प्रमाण दे देंगे। **कुरान और वेद का यही भेद है। इसीलिए वेद स्वतः प्रमाण है।**

किरण क्यों बलवाली होती है? अनवर जी महर्षि के प्रसंग को उद्धृत करते हुए आपने अगला प्रकरण छोड़ दिया। क्यों?

चलिए हम पूरा कर देते हैं –

(२५) "उनके योग से किरण बलवाली होती है। जैसे जल में सूर्य्य का प्रतिबिम्ब अत्यन्त चमकता है..........।"

(ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका प्रकाश्यप्रकाशकविषय)

अब प्रसंग रहा सर्दी-गर्मी का तो भाई, जमाल जी! आप छठी की किताब (पुस्तक) पुनः पढ़ें। हो सकता है कातिब के भ्रम के कारण आपकी पुस्तक में गलत छपा हो। अगर आप फिर भी अपनी बात पर अड़े हो, तो कृपया हमारे इन प्रश्नों का उत्तर दें –

(क) जब उत्तरी गोलार्द्ध में सर्दी होती है तब दक्षिणी गोलार्द्ध में गर्मी क्यों होती है? (अपनी समीक्षा से उत्तर देना)

(ख) अन्तरिक्ष का तापमान शून्य से कितने नीचे है।

(ग) पृथ्वी के समुद्री तल से ऊपर (उर्ध्व) चलने पर तापमान कितने मीटर बाद एक डिग्री से कम होता जाता है? क्यों होता है? कहाँ पहुँचकर शून्य हो जाता है? कुछ ऊँचे पहाड़ों पर बर्फ क्यों जमती है?

(घ) उत्तरी ध्रुव एवं दक्षिणी ध्रुव का मौसम कैसा है और क्यों?

हम आपकी पूर्व समीक्षा में एक भूल और दर्शाते हैं। आप कहते हो कि सूर्य्य २६ करोड़ वर्ष में बड़ी तेजी से चक्कर लगाते हुए, आकाश गंगा की परिक्रमा कर रहा है। किन्तु भाई, अनवर जी! ये आपका अपना मत हो सकता है, खगोलविदों में मतभेद है। कुछ २० करोड़, कुछ २२ करोड़ वर्ष मान रहे हैं। अतः आपकी जानकारी अधूरी है। कोई बात नहीं, ऐसा होता है।

अच्छा, एक शंका है, समाधान कुरान से करना, क्या सूर्य्य के रास्ते में (कक्षा में) दरिया भी पड़ता है, जहाँ सूर्य्य कयामत के रोज़ गिरेगा? और कब?

पौधों में जीवों को सुख-दुःख

महर्षि दयानन्द सत्यार्थप्रकाश के द्वादश समुल्लास में लिखते हैं–

(२६) क्योंकि जो मुख की उष्णता से जीव मरते व उनको पीड़ा पहुँचती हो तो वैशाख या ज्येष्ठ महीने में सूर्य्य की महा उष्णता से वायु- काय के जीवों में से मरे बिना एक भी न बच सके।.........देखो! पीड़ा उसी जीव को पहुँचती है, जिसकी वृत्ति सब अवयवों के साथ विद्यमान हो। इसमें प्रमाण –

पञ्चावयवयोगात्सुखसंवित्तिः।।

यह सांख्यशास्त्र का सूत्र है–जब पाँचों इन्द्रियों का पाँच विषयों के साथ सम्बन्ध होता है, तभी सुख वा दुःख की प्राप्ति जीव को होती है। ....

देखो! जब मनुष्य का जीव सुषुप्ति दशा में रहता है तब उसको सुख वा दुःख की प्राप्ति कुछ भी नहीं होती, क्योंकि वह शरीर के भीतर तो है, परन्तु उसका बहार के अवयवों के साथ उस समय सम्बन्ध न रहने से सुख-दुःख की प्राप्ति नहीं कर सकता और जैसे वैद्य वा आजकल के डॉक्टर लोग नशे की वस्तु खिला वा सुँघाकर रोगी पुरुष के शरीर के अवयवों को काटते व चीरते हैं, उसको उस समय कुछ भी दुःख विदित नहीं होता वैसे वायुकाय अथवा अन्य स्थावर शरीर वाले जीवों को सुख वा दुःख प्राप्त नहीं हो सकता। जैसे मूर्च्छित होने

से सुख-दुःख को प्राप्त नहीं हो सकते।.............? जब उनको सुख-दुःख की प्राप्ति ही प्रत्यक्ष नहीं होती, तो अनुमानादि यहाँ कैसे युक्त हो सकते हैं।

प्रश्न–जब वे जीव हैं, तो उनको सुख-दुःख क्यों नहीं होता होगा?

उत्तर–सुनो, भोले भाईयो! जब तुम सुषुप्ति में होते हो तब तुमको सुख-दुःख प्राप्त क्यों नहीं होते? सुख-दुःख की प्राप्ति के हेतु प्रसिद्ध सम्बन्ध हैं।"

अनवर जमाल जी, महर्षि के निम्न उदाहरण को उद्धृत करते हैं–"यह तुम्हारी बड़ी अविद्या की बात है क्योंकि हरित शाक के खाने में जीव का मरना उनको पीड़ा पहुँचनी क्योंकर मानते हो? भला जब तुमको पीड़ा प्राप्त होती प्रत्यक्ष नहीं दीखती और जो दीखती है तो हमको भी दिखलाओ। तुम कभी न प्रत्यक्ष देख व हमको दिखा सकोगे।" (सत्यार्थप्रकाश, द्वादश समुल्लास)

और अपनी समीक्षा में लिखते हैं–"पेड़-पौधों पर असंख्य सूक्ष्म जीव रहते हैं, जिन्हें माइक्रोस्कोप से देखा जा सकता है। खुद पेड़-पौधों में भी जीवन होता है। जब गाजर-मूली को कच्चा खाया जाता है, तो "कैलियोग्राफी" नामक वैज्ञानिक यंत्र द्वारा उनकी मर्मभेदी पुकार को जाना जा सकता है। इससे पता चलता है कि स्वामी जी को जीव की वास्तविकता का ज्ञान नहीं था। मात्र अनुमान था, जो वैज्ञानिक परीक्षणों द्वारा गलत सिद्ध हो चुका है।"

अनवर जमाल जी! ये है महर्षि दयानन्द का चमत्कार! महर्षि का प्रश्न सूक्ष्म एवं स्थावर योनि के जीवों का था, उनके सुख-दुःख का था? और आप "वृक्ष में और वृक्ष पर" ही उलझ गए।

इसमें आपका नहीं इस्लामी इल्म का दोष है, गैब का चमत्कार है। रूह क्या है? कुरान (अल-फुरकान) चुप है। इसलिए आपने वैज्ञानिकों की शरण ली। वो आपके काम के नहीं। क्यों? उनके परीक्षण कुछ भौतिक एवं रासायनिक क्रियाओं का विश्लेषण मात्र है। जे०सी० वसु जी ने भी बाद में यही माना। अतः आप बहुत दूर की कौड़ी खोज लाए। खैर!

रहा प्रश्न पेड़-पौधों पर सूक्ष्म जीव का? तो जनाब! ये जीव तो आपके और मेरे शरीर पर भी रहते है। चाहें तो माइक्रोस्कोप से देख लें। हमारे शरीर के भीतर भी रहते हैं, जल में भी रहते हैं, हवा में भी रहते हैं, घर की छत पर, दीवार पर, सड़क पर, कुर्सी पर, मेज पर, पैन पर, बर्फ पर, बर्फ के भीतर, ज्वालामुखी के मुहाने पर, उसके अन्दर भी अर्थात् पृथ्वी के प्रत्येक भाग में, ये पाए जाते हैं। प्रश्न तो इनके दुःख-सुख से सम्बन्धित है।

अनवर जी, आपको जानकर आश्चर्य होगा कि आज का वैज्ञानिक इन्हीं सूक्ष्म जीवों की सम्भावना चन्द्रमा, शुक्र, बुध आदि ग्रह पर भी मान रहा है।

आप को जब कुछ न सूझा तो गाजर-मूली पकड़ लाए। किन्तु, आप यह बताना भूल गए "कौन से खेत की मूली", किस प्रयोगशाला की गाजर? परीक्षण कब, कहाँ हुआ था? खेत या जमीन से उखाड़ने के कितनी देर बाद हुआ था?

अच्छा! जब ये रोए थे तो, रोने के संकेत इनके किस भाग में ज्यादा थे, या सम्पूर्ण मूली अथवा गाजर में समान रूप से थे? इनमें एक ही जीव के रोने की आवाज़ थी या कई जीवों के एक साथ रोने की?

अनवर जी! कृपया, आप अपने विश्व प्रसिद्ध वैज्ञानिकों का नाम और पता देना, उनसे और भी प्रश्न करने हैं, नहीं तो आप पूछ लेना।

जब गाजर-मूली रो सकते हैं, तो हँसते भी होंगे, कुछ-कुछ गुनगुनाते भी होंगें, मुस्कुराते भी होंगे?

ये सभी क्रियायें तभी सार्थक हैं, जब वे सुनते भी होंगे, देखते भी होंगे? तो इन क्रियाओं के अवयव, इनमें कौन-से हैं? और इनके किस भाग में स्थित हैं?

कृपया, याद से पूछ लेना!

भ्राता, अनवर जी! अगर आपकी मानें तो पार्कों में रोज हजारों लोग सैर-सपाटे को जाते हैं। वहाँ की घास को रो-रोकर सूख जाना चाहिए? किसान खेत में हल चलाता है, दरांती, खुरपे, फावड़े से कटाई, छंटाई

करता है, उसके खेत भी दुःख से सूख जाने चाहिए? बगीचों में माली के पैर की आहट से, फूल डर से झड़ जाने चाहिए? जंगलों में हजारों जानवर पेड़ों की पत्तियाँ, घास, झाड़-झंकाड़ खाकर पेट भरते हैं। परन्तु कोई जंगल तो क्या, पत्ती तक इस डर, इस दुःख से नहीं सूखी? क्यों?

अनवर जमाल जी का सृष्टि विज्ञान –

सत्यार्थप्रकाश के अग्रलिखित प्रसंग को उद्‌धत करके (अष्टम समुल्लास)

"सबसे पहले टुकड़ा अर्थात् जो काटा नहीं जाता, उसका नाम परमाणु, साठ परमाणुओं से मिले हुए का नाम अणु, दो अणु का एक द्वयणुक जो स्थूल वायु है, तीन द्वयणुक का अग्नि, चार द्वयणुक का जल, पाँच द्वयणुक की पृथ्वी अर्थात् तीन द्वयगुक का त्रसरेणु और उसका दूना होने से पृथ्वी आदि दृश्य पदार्थ होते हैं। इसी प्रकार क्रम से मिलाकर भूगोलादि परमात्मा ने बनाए हैं।"

अनवर जी, अपनी समीक्षा में लिखते हैं–"इस तरह के विचारों ने भी भारत की उन्नति नहीं होने दी जबकि जिन्हें म्लेच्छ कहकर स्वयं से हीन समझा गया, उन्होंने परमाणु को तोड़ना संभव कर दिया—?

साठ परमाणुओं के मिलने से एक अणु नहीं बनता और न ही दो अणुओं अर्थात् १२० परमाणुओं से हवा बनती है। हवा में ऑक्सीजन, नाइट्रोजन.........कई गैसें होती हैं और प्रत्येक गैस के एक अणु में अलग-अलग संख्या में परमाणु जुड़े होते हैं। साठ परमाणु इनमें से किसी के भी एक अणु में नहीं होते। इसी प्रकार आठ अणुओं से जल नहीं बनता बल्कि केवल तीन अणुओं से बनता है। दो अणु हाइड्रोजन के और एक अणु ऑक्सीजन का मिलता है तो जल बनता है। अग्नि और मिट्टी की संरचना का वर्णन भी सरासर गलत है।"

अनवर भाई! अल्लाह ने आदम को मिट्टी से, इबलीस (शैतान) को आग (अग्नि) से बनाया था। अतः आपकी अति कृपा होती जो आप समाधान भी देते और समझाते, ये कारण रूप मिट्टी जिससे 'आदम' बना व कारण रूप अग्नि जिससे शैतान बना, क्या हैं?

परन्तु, क्या करें! 'कुन-फयकुन" के होते भी अल्लाह को आदम को खनखनाते गारे से बनाना पड़ा और अग्नि से शैतान। अब दोनों

'अदन' के बाग से बाहिर हैं।

कायानात थी नहीं, परन्तु...... अल्ला ने हजरत मौहम्मद का नूर बना दिया। कैसे?

अनवर जी! ऐसे विज्ञान को पढ़ोगे तो न तो छठी के विज्ञान को और न ही वैदिक विज्ञान को समझ पाओगे। अतः वेद की ठंडी छांव में आओ, ज्ञान बढ़ेगा।

जिसको आप अणु-परमाणु से सम्बोधित कर रहे हैं, महर्षि उनके बारे (मुत्तालिक) क्या कहते हैं, देखें –

(२७) "(अणु) सूक्ष्म, महत् (बड़ा)। जैसे त्रसरेणु, लिक्षा से छोटा और द्वयणुक से बड़ा है।" (सत्यार्थप्रकाश : तृतीय समुल्लास)

(२८) "जब परमाणु अलग-अलग हो जाते हैं, तब वे देखने में नहीं आते, इसी का नाम 'नाश' है और जब परमाणु के संयोग द्रव्य स्थूल अर्थात् बड़ा होता है, तब वह देखने में आता है और 'परमाणु' उसको कहते हैं कि जिसका विभाग फिर कभी न हो सके।"

(ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, वेदविषय विचार)

(२९) "तथा उत्पत्ति वह कहाती है कि जो (पृथग्भूत) अनेक द्रव्यों के संयोग विशेष से स्थूल पदार्थ का उत्पन्न होना (है)। और जब वे पृथक्- पृथक् होके उन द्रव्यों के वियोग से जो कारण में उनकी परमाणुरूप अवस्था होती है, उसको विनाश कहते हैं और द्रव्य स्थूल होते हैं, वे चक्षु आदि इन्द्रियों से देखने में आते हैं। फिर उन स्थूल द्रव्यों के परमाणुओं का जब वियोग हो जाता है, तब सूक्ष्म होने से वे द्रव्य देख नहीं पड़ते, इसका नाम नाश है।"

(ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका : वेदनानित्यत्वविचारः)

(३०) "जो कार्यरूप पृथिव्यादि पदार्थ और उनमें रूप, रस, गन्ध, स्पर्श गुण हैं, ये सब द्रव्यों के अनित्य होने से अनित्य हैं और जो इसके कारणरूप पृथिव्यादि नित्य द्रव्यों में गन्धादि गुण हैं वे नित्य हैं।"

(सत्यार्थप्रकाश, तृतीयः समुल्लास–विषय-द्रव्यगुण निरूपण)

भ्राता अनवर जी! सत्यार्थप्रकाश के तृतीय समुल्लास को ही अगर आप मनोयोग से पढ़ लेते तो सृष्टि विषय स्पष्ट हो जाता। महतत्त्व, पंचतन्मात्रायें (सूक्ष्मभूत), स्थूलभूत आदि क्या हैं? जान पड़ता। द्रव्य,

द्रव्यों के गुण क्या हैं? कार्यरूप, कारणरूप पृथिव्यादि पदार्थ क्या है? समझ में आ जाता। क्या करें, चश्मा (उपनेत्र) तो कुरान (अल-फुरकान) का है। जहाँ आसमान की खाल उतारी जाती है, तारे शोलों की मानिंद जिन्नों पर फैंकें जाते हैं।

फूलों में सुगन्ध, प्रकाश की किरणों में रंग, त्वचा में स्पर्श का गुण किन द्रव्यों के कारण है? अनवर जी! बताइयें?

नाखून और बाल में स्पर्श का गुण क्यों नहीं है? आँख में देखने का गुण है, सुनने का नहीं? कान में सुनने का गुण है, देखने का नहीं? नाक में घ्राण (सूँघने) का गुण हैं, स्वाद का नहीं? कृपया बतायें?

क्या ! हजरत मोहम्मद के नूर के कारण ? नहीं, गलत जवाब।

किन द्रव्यों का गुण हैं जिस कारण पृथिवी से अंतरिक्ष तक शब्द पहुँचता है? लकड़ी या पत्थर के दूरभाप (टेलीफोन) यंत्र और संचार प्रसारक क्यों नहीं बनते? विचार कर बताना? ये छठी का विज्ञान नहीं है।

जनाब, अनवर जमाल जी! आज का वैज्ञानिक केवल कार्य को जानता है, सूक्ष्म कारण तो अभी तक उसकी पहुँच से दूर हैं।

अब रहा प्रसंग आपके 'परमाणु' के विभाग का? तो भाईजान, जिसको भौतिक वैज्ञानिकों ने आरम्भ में परमाणु कहा, क्या वो परमाणु की परिभाषा में खरा उतरता था?

शब्द उधार का था, इसलिए जिसको परमाणु कहा वो कुछ और निकला। परन्तु शब्द रूढ़ हो गया और आप जैसे महानुभावों ने 'अंधों का हाथी बना दिया।''

लेकिन परिभाषा खण्डित नहीं हुई। विषय वही है। आज भी आधुनिक विज्ञानवित् उस मूल पदार्थ को खोज रहा है, जो सबका कारण है, स्वयं किसी का कार्य नहीं है। महर्षि उसे 'परमाणु' कहते हैं तथा स्पष्ट करते हैं कि यह प्रत्यक्ष प्रमाण से नहीं जाना जा सकता।

वर्तमान में भौतिक विज्ञान 'क्वार्क' को Elementry Particle (मूल पदार्थ) मान रहा है। किन्तु इस पर भी मतभेद है। अतः आने वाले वर्षों में कौन पदार्थ परमाणु की कसौटी पर खरा उतरता है, देखते हैं? अगर महर्षि का विज्ञान अक्षरशः सिद्ध हुआ तो? या अल्लाह!!!!

अब आपने जो परमाणु, अणु, नाईट्रोजन, ऑक्सीजन आदि की संरचना पर स्याही बरबाद की, वो महर्षि के कौन से ग्रन्थ ली है, कृपया स्पष्ट करें? या ! ये आपकी अटकलपच्चु है? महर्षि तो इनको, जिन्हें हम Metal, Non-Netal, Water, Heavy Water, Gas, Liquid आदि कहते हैं, पृथिव्यादि पदार्थों का विकार मानते हैं। दृष्टव्य –

(३१) "पृथिवी के विकार काष्ठ और लोहा आदि"

(ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका नौविमानादि विद्याविषय)

अतः आपका आक्षेप क्या है? क्यों है? कुछ नहीं, बस! "बहरे की टून, गूँगे का शोर।"

क्या आवागमन (पुनर्जन्म) असम्भव है ?

अनवर जी ने "आवागमन भी असंभव है", इस पर अपनी समीक्षा प्रस्तुत की है। उन्होंने 'पुर्नजन्म' से परहेज किया है (केवल शब्द से)। इसका कारण उन्होंने नहीं बताया। खैर! अनवर जी की समीक्षा देखते हैं–"वेदों में स्वर्ग-नरक का वर्णन मिलता है, जिसे स्वामी जी ने अलंकार माना है, जबकि उन्होंने आवागमन को सत्य माना है। हालांकि वेदों में उसका वर्णन करने वाला एक सूक्त बल्कि एक मंत्र तक नहीं है। स्वामी जी ने माना है कि मोक्ष-प्राप्त आत्मा एक निश्चित अवधि तक मुक्ति सुख भोगती है, उसके बाद वह जन्म लेती है।

प्रश्न यह है कि मुक्ति सुख भोगने के बाद वह किस योनि में जन्म लेगी? पशु-पक्षी योनियों में तो वह जाएगी नहीं, क्योंकि उसने कोई पाप नहीं किया और मनुष्य योनि वह पाएगी नहीं, क्योंकि पुण्य उसका शेष बचा नहीं है। इसी प्रकार पापी मनुष्य जब कुत्ता, सुअर आदि बनकर अपने कर्मों का पूरा फल भोग लेता है तो वह किस योनि में जन्म लेगा? विभिन्न भोग योनियों में जाकर तो वह दंड भोग चुका है, उनमें जाना तो न्याय के विपरीत है और मनुष्य योनि में जन्म तो बड़े पुण्य से मिलता है जो कि उसके पास है नहीं इसलिए मनुष्य योनि में उसे जन्म क्यों मिलेगा? और यदि किसी कारणवश मान भी लिया जाए कि दोनों को नयी शुरुआत मनुष्य योनि से अथवा किसी अन्य योनि से करायी जाएगी तो उस योनि को शैशव और बाल्यावस्था में सर्दी-गर्मी, भूख-प्यास और रोगादि के जो कष्ट वह आत्मा उठाएगी,

उनका कारण क्या माना जाएगा ? जबकि उसके पास पूर्व संचित पाप कर्म के नाम पर शून्य हैं। इस प्रकार इस कल्पना के माध्यम से जिस प्रश्न का समाधान करने का दावा किया गया, उस प्रश्न का समाधान नहीं हो पाता। आवागमन के कारण स्वर्ग-नरक के अस्तित्व का इन्कार करके उन्हें मात्र अलंकार माना गया जबकि वास्तव में आवागमन स्वयं ही तर्कसंगत सिद्ध नहीं होता।''

अनवर जी! हम आपकी समीक्षा पर क्या कहें? स्पष्ट है आपने सत्यार्थप्रकाश व ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका को आद्योपान्त नहीं पढ़ा। अन्यथा ऐसी अप्रामाणिक बात कभी न कहते। चलिये! हम महर्षि के कुछ प्रमाणों को उद्‌धृत करते हैं —

(३२) **''कस्य नूनं कतमस्यामृतानां मनामहे चारु देवस्य नाम।**
को नो मह्या अदितये पुनर्दात् पितरं च दृशेयं मातरं च।।१।।
अग्नेर्वयं प्रथमस्यामृतानां मनामहे चारु देवस्य नाम।
स नो मह्या अदितये पुनर्दात् पितरं च दृशेयं मातरं च।।२।।
(ऋग्वेद मं०।। सू० २४१ म०१, २)

(**नोट**—वेदों में ऐसे अनेक सूक्त हैं, जो पुनर्जन्मों से सम्बन्धित हैं आवागमन), उनमें से एक यहाँ आपकी नज़र है।

इदानीमपि सर्वत्र नात्यन्तोच्छेदः।। सांख्यसूत्र (अ०१/सू. १६६)

प्रश्न—हम लोग किसका नाम पवित्र जानें? कौन नाशरहित पदार्थों के मध्य में वर्तमान देव सदा प्रकाश स्वरूप है। हमको मुक्ति का सुख भोगकर पुनः इस संसार में जन्म देता और माता तथा पिता का दर्शन कराता है।।१।।

उत्तर—इन इस प्रकाशस्वरूप अनादि, सदामुक्त परमात्मा का नाम पवित्र जानें जो हमको मुक्ति में आनन्द भोगकर पृथिवी में पुनः माता-पिता के सम्बन्ध में जन्म देकर माता-पिता का दर्शन कराता है। वही परमात्मा मुक्ति की व्यवस्था करता सबका स्वामी है।।२।।

जैसे इस समय बन्ध मुक्ति जीव हैं वैसे ही सर्वदा रहते हैं, अत्यन्त विच्छेद बन्ध मुक्ति का कभी नहीं होता, किन्तु बन्ध और मुक्ति सदा नहीं रहती।''

(३३) **"प्रश्न–वे चार पुरुष तो सृष्टि के आदि में उत्पन्न हुए थे, उनका पूर्व पुण्य कहां से आया?**

उत्तर–सब जीव स्वरूप से अनादि हैं। जीवों के कर्म और स्थूल कार्य जगत् ये प्रवाह से अनादि हैं.........।"

(प्रमाण सं० ३२–सत्यार्थप्रकाश नवम समुल्लास
विषय मुक्ति से जीव का लौटना)

(प्रमाण सं० ३३–ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका–वेदोत्पत्ति विषय)

(३४) **"प्रश्न–उन चारों ही में वेद का प्रकश किया अन्य में नहीं। इससे ईश्वर पक्षपाती होता है।**

उत्तर–वे ही चार सब जीवों में अधिक पवित्रात्मक थे। अन्य उनके सदृश नहीं थे। इसलिए पवित्र विद्या का प्रकाश उन्हीं में किया।"

(सत्यार्थप्रकाश सप्तम समुल्लास–विषय वेदों के प्रकाशक)

(३५) **"प्रश्न–मनुष्य का जीव पश्वादि में और पश्वादि का मनुष्य के शरीर में और स्त्री का पुरुष के और पुरुष का स्त्री के शरीर में जाता-आता है वा नहीं?**

उत्तर–हाँ! जाता-आता है, क्योंकि जब पाप बढ़ जाता, पुण्य न्यून* होता है तब मनुष्य का जीव पश्वादि नीच शरीर और जब धर्म अधिक तथा अधर्म न्यून होता है तब देव अर्थात् विद्वानों का शरीर मिलता और जब पुण्य-पाप बराबर होता है तब साधारण मनुष्य जन्म होता है। इसमें भी पुण्य-पाप के उत्तम, मध्यम, निकृष्ट शरीरादि सामग्रीवाले होते हैं और जब अधिक पाप का फल पश्वादि शरीर में भोग लिया है, पुनः पाप-पुण्य के तुल्य रहने से मनुष्य शरीर में आता और पुण्य के फल भोगकर फिर भी मध्यस्थ मनुष्य के शरीर में आता है।—

—जो स्त्री के धारण करने योग्य कर्म हों तो स्त्री और पुरुष के शरीर धारण करने योग्य, कर्म हों तो पुरुष के शरीर में प्रवेश करता है......" (सत्यार्थप्रकाश नवम समुल्लास–विषय न्यायकारी परमात्मा की व्यवस्था)

(३६) "इसी प्रकार बिना कारण के करने से ईश्वर को दोष लगे। परमेश्वर के ऊपर न्याययुक्त काम करना अवश्य है, क्योंकि वह स्वभाव

* न्यून का अर्थ बहुत कम होता है, सर्वथा अभाव होना नहीं।

से पवित्र और न्यायकारी है। जो उन्मुक्त के समान काम करे तो जगत् के श्रेष्ठ न्यायधीश से भी न्यून और अप्रतिष्ठित होवे। क्या इस जगत् में विना योग्यता के उत्तम काम किये प्रतिष्ठा और दुष्ट काम किये विना दण्ड देने वाला निन्दनीय अप्रतिष्ठत नहीं होता? इसलिए ईश्वर अन्याय नहीं करता। इसी से किसी से नहीं डरता।"

(३७) "**प्रश्न–परमात्मा ने प्रथम ही से जिसके लिए जितना देना विचारा है, उतना देता और जितना काम करना है, उतना करता है।**

उत्तर–उसका विचार जीवों के कर्मानुसार होता है। जो अन्यथा हो तो वही अपराधी, अन्यायकारी होवे।" (प्रमाण–३६, ३७ सत्यार्थप्रकाश नवम समुल्लास, विषय जन्मों की अनेकता)

(३८) "**प्रश्न–जन्म एक हैं या अनेक?**

उत्तर–अनेक।

प्रश्न–जो अनेक हों तो पूर्वजन्म और मृत्यु की बातों का स्मरण क्यों नहीं?

उत्तर–जीव अल्पज्ञ है त्रिकालदर्शी नहीं, इसलिए स्मरण नहीं करता और जिस मन से ज्ञान करता है वह भी एक समय में दो ज्ञान नहीं कर सकता। भला पूर्वजन्म की बात तो दूर रहने दीजिए, इसी देह में जब गर्भ में जीव था, शरीर बना पश्चात् जन्मा पाँचवें वर्ष से पूर्व तक जो-जो बातें हुई हैं, उनका स्मरण क्यों नहीं कर सकता? — —

और जो स्मरण नहीं होता इसी से जीव सुखी है, नहीं तो सब जन्मों के दुःखों को देख-देख दुःखित होकर मर जाता। — क्योंकि जीव का ज्ञान और स्वरूप अल्प है। यह बात ईश्वर के जानने योग्य हैं, जीव के नहीं।"

(सत्यार्थप्रकाश नवम समुल्लास विषय जन्मों की अनेकता)

(३९) "तो तब तुम जन्म से लेकर समय-समय में राज, धन, बुद्धि, विद्या, दारिद्र्य, निर्बुद्धि, मूर्खता आदि सुख-दुःख संसार में देखकर पूर्वजन्म का ज्ञान नहीं करते।" (सत्यार्थप्रकाश नवम समुल्लास)

(४०) "देखो! एक जीव विद्वान् पुण्यात्मा, श्रीमान् राजा की रानी के गर्भ में आता और दूसरा महादरिद्र घसियारी के गर्भ में आता है।

एक को गर्भ से लेकर सर्वथा सुख और दूसरे को सब प्रकार का दुःख मिलता है। एक जब जन्मता है तब सुन्दर सुगन्धियुक्त जलादि से स्नान, युक्ति से नाड़ी छेदन, दुग्धपानादि यथायोग्य प्राप्त होते हैं। जब वह दूध पीना चाहता है तो उसके साथ मिश्री आदि मिलाकर यथेष्ठ मिलता है। उसको प्रसन्न रखने के लिये नौकर-चाकर खिलौना सवारी उत्तम स्थानों में लाड़ से आनन्द होता है। दूसरे का जन्म जंगल में होता है, स्नान के लिए जल भी नहीं मिलता, जब दूध पीना चाहता है तब दूध के बदले में घूँसा, थपेड़ा आदि से पीटा जाता है। अत्यन्त आर्तस्वर से रोता है। कोई भी नहीं पूछता इत्यादि जीवों को विना पुण्य-पाप के सुख-दुःख से परमेश्वर पर दोष आता है।

दूसरे जैसे विना किये कर्मों के सुख-दुःख मिलते हैं तो आगे नरक-स्वर्ग भी न होना चाहिए, क्योंकि जैसे परमेश्वर ने इस समय विना कर्मों के सुख-दुःख दिया है वैसा मरे पीछे भी जिसको चाहेगा उसको स्वर्ग में जिसको चाहे नरक भेज देगा। पुनः सब जीव अधर्मयुक्त हो जाएँगे, धर्म क्यों करें? क्योंकि धर्म का फल मिलने में सन्देह है। परमेश्वर के हाथ है, जैसी उसकी प्रसन्नता होगी वैसा करेगा तो पापकर्मों में भय न होकर संसार में पाप की वृद्धि और धर्म का क्षय हो जाएगा। इसलिए पूर्वजन्म के पुण्य-पाप के अनुसार वर्तमान जन्म और वर्तमान तथा पूर्वजन्म के कर्मानुसार भविष्यत् जन्म होते हैं।"

(सत्यार्थप्रकाश नवम समुल्लास विषय जन्मों की अनेकता)

भाई अनवर जी, आपका आक्षेप इतने विस्तृत समाधान की अपेक्षा नहीं रखता था। प्रमाण सं० ३२ से ३५ तक में आपके आक्षेप का उत्तर भी निहित है। शेष प्रमाण पाठकों के समाधानार्थ दिये हैं, जिससे वो वैदिक कर्मफल व्यवस्था को संक्षेप में समझ लें। जो ज्यादा जानने को उत्सुक हों, तो वो सत्यार्थप्रकाश व ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका को मनोयोग से पढ़ लें।

इस्लाम और कर्मफल सिद्धान्त

भाई अनवर जी ! आपने किस मनः स्थिति से महर्षि पर मनगढ़न्त, मिथ्या आरोप लगाए, यह हम नहीं जानते। किन्तु आपके आक्षेपों में दो तथ्य स्पष्ट हैं और उनमें से कौन-सा सत्य है; ये आपके विवेक

पर–

(क) आपने ऋषि के ग्रन्थों का अध्ययन नहीं किया, अपितु कहीं से उधार के प्रश्न लिख मारे?

(ख) अगर आपने पढ़े हैं तो आपके पल्ले नहीं पड़े। क्यों? शायद———!

आपके आक्षेपों का समाधान हुआ या नहीं। इसका दावा हम नहीं करते। ये निर्णय तो पाठकों का तथा आपका अपना है। हमने सत्यता क्या है, वो सबके अवलोकनार्थ प्रस्तुत की है।

अब अगर आप मानसिक रूप से, स्वस्थ चित्त से सत्यज्ञानपूर्वक विचार को, मनन-चिन्तन को तैयार हैं तो कुछ प्रश्न हम भी आप से कर सकते हैं। इज़ाज़त है?

आप मानते हो कि, ये जीवन तथा सृष्टि प्रथम है। इससे पूर्व नहीं थी। इस सृष्टि के बाद कयामत (प्रलय) तथा उसके बाद जन्नत या दोज़ख, जो अनन्त काल तक होगी। आपका ये भी विश्वास है कि अल्लाह केवल अकेला था, शेष कुछ नहीं था। उसने इस कायनात को अपनी कुदरत से बनाया है।

अगर कोई प्रश्न करता है कि अल्लाह ने कायनात को क्यों बनाया, मखलूक क्यों पैदा की? तो इस्लाम के आलिमों का उत्तर होता है, अपनी कुदरत को दिखाने के लिए व अपनी इबादत करवाने के लिये।

आप से हमारे निम्न प्रश्न हैं –

(क) अल्लाह के निन्यानवे नाम उसके गुणों को प्रदर्शित करते हैं तथा वह अनादि है, अतः उसके गुण भी अनादि होंगे, तो जब यह कायनात नहीं थी, तब अल्लाह के गुण और अल्लाह की क्या सार्थकता थी?

(ख) जब अल्लाह अनन्त काल से अकेला था, तो अचानक यह कायनात बनाने की इच्छा और इबादत करवाने की चाह कहाँ से आ गयी? अगर हमेशा से थी, तो उसकी उपयोगिता क्या, तथा इससे पहले जगत क्यों नहीं?

(ग) अल्लाह ने यह कायनात अपनी कुदरत से बनाई है, तो कुदरत द्रव्य है या गुण? गुण है तो उससे कायनात कैसे बनी, द्रव्य है तो

फिर अल्लाह अकेला कैसे हुआ?

(घ) पूर्वजन्म आप मानते नहीं, तो कोई रसूलिल्लाह कोई फकीर, कोई अन्धा, कोई बहरा? क्यों आदमियों में इतनी विभिन्नता क्यों?

(ङ) अगर इबादत की ही केवल इच्छा थी तो फोज़े फरिश्तों की इबादत से क्या मन नहीं भरा था, जो आदम को बनाया? जिन्न को क्यों बनाया।

(च) अगर आदम को भी इबादत के लिये बनाया था तो, उससे केवल इबादत क्यों नहीं करवायी? अदन के बाग क्यों भेजा, हव्वा को क्यों बनाया? उससे इतने आदमजात क्यों पैदा की?

(छ) क्या कयामत के बाद जन्नत में भी इबादत होगी? किसकी? कौन करेगा? गिलमान और हुरें भी इबादत करेंगे? इस इबादत का फल क्या होगा?

(झ) अगर इबादत नहीं करेंगे तो, अल्लाह की इस इच्छा का क्या होगा?

(ञ) कोई पैदा होते ही मरा, कोई १० साल में मरा, कोई २० में, कोई ३० साल में तो कोई १०० साल में मरा? कोई अमीर रहा, कोई गरीब रहा? कोई अपाहिज रहा, कोई स्वस्थ क्या सब मोमिनों को एक जैसी जन्नत मिलेगी? अगर हाँ, तो न्याय क्या हुआ, अगर न! तो जो मन, कर्म, वचन से मोमिनों के कर्मों में अन्तर होगा तो उसके हिसाब से आपके यहाँ कितने दर्जे और कितनी जन्नतें हैं। यथा दोज़खों का भी बयान करें?

(ट) जन्नत और दोज़खी दोनों का आदि न सही, परन्तु अन्त तो अल्लाह का शरीक हो गया? कृपया, इस गुत्थी को सुलझायें?

(ठ) जीवन सान्त, फल अनन्त कैसे?

प्रश्न हैं, बहुत हैं, ये भी महर्षि और हमारे शास्त्रार्थ महारथी पूछते रहें हैं सो उनमें कुछ आपके लिये हैं। इन्हें सुझाएँ, उसके बाद और शंकाएँ आयेंगी।

आपसे निवेदन है कि अपनी समीक्षा व ज़ालिकल किताब "कुरान" की रोशनी में इनका समाधान करें।

आपका दावा है कि वह (महर्षि दयानन्द) स्वयं ही अपनी मान्यताओं पर चलने में सफल नहीं हो सके, क्योंकि उनकी मान्यताएँ मानव प्रकृति और धर्म के अनुकूल नहीं थीं। वह (महर्षि दयानन्द) तो जान ही नहीं पाये कि धर्म अपराधी को कितने वर्गों में बाँटता है और किस वर्ग के अपराधी के लिए क्या आदेश देता है।

यह आरोप आपने महर्षि दयानन्द के विषपान के प्रसंग को उद्धृत कर जड़ा है। साथ ही आपने महर्षि के उपासना विषय को भी अपनी कलम की स्याही बर्बाद करने का विषय बनाया है। आपकी इस कुतर्की बुद्धि का हम क्या करें? महर्षि का विषपान समाज के उत्थान के लिया था, किन्तु आपका विषवमन.............?

आपसे निवेदन है कि कम से कम सत्यार्थप्रकाश के पंचम समुल्लास में संन्यास प्रकरण को ध्यान से पढ़ियेगा, तथा तब अपने आरोप को उसके समानान्तर रखकर स्वयं विश्लेषण करियेगा। आपको अपने पक्ष की निःसारता अभिप्रेत होगी।

अब आपसे एक निवेदन और है, ईश्वर का सामर्थ्य अनन्त है अतः उसमें न्याय और दया समानार्थी है। किन्तु जीव अल्प सामर्थ्य वाला है, सो न्याय और दया इसमें एक-दूसरे के सर्वथा विलोम तो नहीं, समानार्थी भी नहीं है। अतः मनुष्य (आदमजात) का अपना निर्णय परिस्थिति तथा मानवधर्मानुकूल एवं सामाजिक हित चिन्तनानुसार होना चाहिए। अतः पुनः निवेदन है, महर्षि संन्यासी थे, उनका व्यवहार दयापूर्ण होना आवश्यक था। अपराध उनके प्रति था, किसी अन्य के नहीं। सो महर्षि ने संन्यास आश्रम की लाज रखी, उपासना का लाभ दर्शाया, आपका आरोप क्या और क्यों?

जनाब, हम आपके लेख के आलेख से समझ गये हैं कि महर्षि दयानन्द को आपने नहीं पढ़ा। अतः, पुनः हम उपासना का फल महर्षि के शब्दों में बतलाते हैं —

प्रमाण (४) **"मन्युरसि मन्युं मयि धेहि सहोऽसि सहो मयि धेहि।। २।।** (यजु० अ० १। मं० ६॥)

(सत्यार्थप्रकाश—सप्तम समुल्लास-प्रार्थना विषय)

अर्थ—आप दुष्ट काम और दुष्टों पर क्रोधकारी हैं, मुझको भी वैसा ही कीजिये।

आप निन्दा, स्तुति और स्व-अपराधियों को सहन करने वाले हैं, कृपा से मुझको भी वैसा ही कीजिये ॥२॥ (सत्यार्थप्रकाश सप्तम समुल्लास)

अनवर जी! इसीलिए वेद स्वतः प्रमाण है। उपरोक्त प्रमाण से स्पष्ट है, ईश्वर अपने प्रति किये गए अपराध को क्षमा करता है। यथा जैसे—ईश्वर की निन्दा करना आदि, किन्तु अन्यों के प्रति किये गए अपराधों के लिए दण्डित करता है। अतः इसी उपासना का परिणाम था, जो महर्षि ने अपने प्रति किये अपराध को क्षमा किया। किन्तु, क्या कुरान का अल्लाह ऐसा है? अनवर जी, उत्तर की अपेक्षा है?

अब प्रश्न रहा अपराध, अपराधी के वर्गीकरण का? तो भाई अनवर जी प्रश्न सं० 'ट' देखें और उत्तर दें। और यही नियम मनुष्यों की व्यवस्था पर भी लागू करें और मन, कर्म व बचन द्वारा किये गए अपराध व सुकर्मों का वर्गीकरण करके बताएं? साथ ही एक शंका और इस्लामी शरीय पूर्णतः कहाँ लागू है और अन्य जगह (इस्लामी) राज्यों में क्यों नहीं? प्रश्न जटिल है। अपेक्षा है, आप समाधान अवश्य करेंगे? अस्तु!

रसूललिल्लाह और उनकी रहमत

हम चाहते तो नहीं थे किन्तु, आपने विवश किया, अतः हुजूर! हजरत मुहम्मद के बारे में कुछ पूछना पड़ रहा है। हजरत मुहम्मद के नाम अल्लाह से एक ज्यादा हैं.........शायद! सो हम पूछने के अधिकारी हैं क्योंकि रसूललिल्लाह 'रहमान' (रहमत) वाले हैं अतः हम भी रहमत की अपेक्षा तो रखते हैं।

हमारी शंका है –

(१) हज़रत मुहम्मद ने स्वयं कई विवाह रचाये। कुछ के निकाह के प्रमाण मिलते हैं, कुछ के नहीं। खैर ये अल्लाह और रसूल के बीच का मसला है। परन्तु 'हज़रत अली' जब फातिमा के रहते दूसरा निकाह करना चाहते थे, तो हज़रत मुहम्मद नाराज़ क्यों हुए? जबकि चार शादियों को कुरान जायज़ करती है।

(कृपया सिरातुल नबी अवश्य देखना शायद उत्तर मिले)

(२) "अब्दुल्ला बिना उबाया' मुनाफिक था। हज़रत मुहम्मद को अनेक अवसरों पर उपहास का विषय बनाता था तथा कई महत्त्वपूर्ण युद्ध के अवसरों पर धोखा देकर चला गया था। कुरान भी "मुनाफिको" के विरुद्ध बहुत सख्त आदेश देती है तथापि हज़रत मुहम्मद का व्यवहार अप्रत्याशित रूप से उसके प्रति नरम रहा, उसके मरने पर 'मौत का फातिहा' भी पढ़ा, हालांकि हज़रत उमर ने रोका भी। हज़रत मुहम्मद ने ऐसा क्यों किया। हदिशों व कुरान का इसमें क्या आदेश है, बतायें?

(३) बानू कुरेजा का युद्ध इस्लाम की तारीख में क्या महत्त्व रखता है। इसका जिक्र, पक्ष और विपक्ष में कई इतिहासकारों ने अपने-२ मतानुसार किया है। हमें इससे कोई सरोकार नहीं कि क्षमा याचना के बाद में कितने निहत्थे (२०० या ६००) इन्सानों को हाथ बाँधकर, सर कलम करके खंदक में डाला गया। हम इस विवाद में भी नहीं पड़ना चाहते कि एक स्त्री को भी कत्ल कर दिया गया। बचे स्त्रियों व बच्चों को अपने जेहादियों में माले गनीमत के रूप में बाँट दिया। इससे भी हमें कोई लेना-देना नहीं। यह 'दारूल इस्लाम" के निज़ाम का अपना कर्त्तव्य। किन्तु हमें एक महिला 'रेहना' का प्रकरण समझाएँ। जिसके परिवार को, उसके पति को उसकी आँखों के सामने मारा गया और हज़रत मुहम्मद ने उसे निकाह की दावत दे डाली। लेकिन गम् की मारी रेहना ने इंकार किया। हज़रत ने अपनी लौंडी बना लिया। बेचारी ज्यादा समय जीवित न रही और इस्लाम भी न स्वीकारा। हज़रत मुहम्मद की इस रहमत को कुराने पाक की रोशनी में क्या क़हेंगे?

(४) "निःसन्देह हमने तुम्हें (हे मुहम्मद) विजय प्रदान की, एक खुली विजय ताकि अल्लाह तुम्हारे अगले गुनाह और पिछले सब क्षमा कर दें और अपनी नेमत तुम पर पूरी कर दें और तुम्हें सीधे मार्ग पर चलाए और अल्लाह तुम्हारी प्रभावपूर्ण सहायता करें।"

(सूरत अल-फतह, आयत—१,३)

हमें सं० ४ में उल्लेखित आयत का सन्दर्भ पल्ले नहीं पड़ा। कहाँ पाँच वर्ष के हज़रत को फरिश्तों द्वारा शरीर खोल के ज़म-ज़म के पानी

से शुद्ध करना। फिर मेराज की घटना के समय भी यही प्रक्रिया दोहराना और कहाँ ये आयत। क्या, सखरे आलम, कोई गुनाह कर सकते थे, या किये थे——या अल्लाह, जो यह आयत नाज़िल हुयी।

कुर्आन का विज्ञान

महर्षि दयानन्द का उद्‌भव और भौतिक विज्ञान की प्रगति ने मत-पन्थों के आधार को, सोच को पूर्णतः परिवर्तित कर दिया। विशेषतः भारत में, वर्तमान समय में कुर्आन के अन्दर विज्ञान की उन्नत अवस्था होने का ढोल विभिन्न प्रचार माध्यमों पर पीटा जा रहा है। अनवर जी भी इसी मत के पोषक हैं।

इल्हाम की अप्रासंगिकता का तकाज़ा था कि कुर्आन की समीक्षा आज के सन्दर्भ में समुचित रूप से होती, किन्तु अनवर जी ने महर्षि पर कई प्रसंगों को अलंकार मानने का आरोप जड़ दिया और इसकी आड़ लेकर महर्षि के भाष्य को चुनौती दे बैठे। किन्तु! आप यह भूल गए कि महर्षि ने वेद को स्वतः प्रमाण माना है तथा वेद के प्रमाण वेद से ही दिए हैं। इस उद्योग में उन्होंने प्राचीन महर्षियों का अनुसरण किया है।

किन्तु, भाई अनवर जी! क्या कुरान के साथ ऐसा है?

(१) "वह घड़ी निकट आ लगी और चाँद फट गया"

(सूरत ५४, अलकमर, आयत—१)

(२) अनस से रिवायत है—"मक्का के लोगों ने हज़रत मुहम्मद से चमत्कार दिखाने को कहा, अतः उन्होंने चमत्कार दिखाया, चाँद दो हिस्सों में फट गया।" (सही अल-बुखारी, हदीस ६/४८६७)

ऊपर दी हुई घटना—"शक्कुल कमर" को, जन्नत की हूरों, गिलमानों को, जन्नत व दोज़ख को, वर्तमान में कितने कुर्आन के भाष्यकारों ने अलंकारिक माना है, स्पष्ट करें? क्या जो रसूलल्लाह को न सूझा, तेरह सौ वर्षों में किसी और की बुद्धि में न आया, वह पिछले सवा सौ साल में इन भाष्यकारों की समझ में कहाँ से आया? कारण क्या है! भाई अनवर जी!!!!——!

कुर्आन का दावा है –

(३) "रोशन किताव की कसम! आसान किया कि वह समझें।"
(सुरतुज्जुखरुफ़–४३, आयत–२, ३)

(४) "तो हमने इस कुर्आन को तुम्हारी ज़वान में आसान किया कि वह समझें।" (सुरतुल जासियति–४६, आयत–५८)

(५) "अल्लाह जो कुछ चाहता है, मिटा देता है। इसी तरह वह क़ायम भी रखता है। मूल किताव तो स्वयं उसी के पास है।"
(सूरत–अर, रअ्द–१३, आयत–३९)

(६) "हमें मालूम है कि वे कहते हैं–उसको तो वस एक आदमी सिखाता-पढ़ाता है। हालांकि जिसकी ओर वे संकेत करते हैं, उसकी भाषा विदेशी है और यह स्पष्ट अरवी भाषा है।"
(सूरत–अन-नहल्-१६, आयत-१०३)
(नोट–यहाँ जिव्रील 'फरिश्ता' मुराद है)

(७) "और हमने कुरआन को नसीहत के लिए अनुकूल और सहज वना दिया है। फिर, क्या है कोई नसीहत हासिल करने वाला?
(सूरत अल-कमर-५४, आयत–१७)

अर्थात्–ज़ालिकल किताव (यह किताव) उस मूल कुर्आन की नक़ल है जो लौह महफूज में है, अल्लाह के पास सुरक्षित है। इस, ज़ालिकल किताव की भाषा अरवी है, किन्तु! मूल किताव की भाषा विदेशी है। यहाँ विदेशी भाषा से कौन-सी ज़वान मुराद है, कुछ नहीं पता। शायद यही भाषा अल्लाह ने आदम को सिखायी हो? जिव्रील और हज़रत मुहम्मद किस भाषा में सम्वाद करते थे, कुछ नहीं पता, क्योंकि जिव्रील की भाषा तो विदेशी है (अरवी नहीं) मूल किताव का तर्जुमा अरवी में कैसे हुआ, किसने किया और कव किया? अनवर जी! कुछ तो रोशनी डालो?

(नोट–जिव्रील आयत लाता था, मुहम्मद साहव को पढ़ाता था जिव्रील की भाषा विदेशी थी, कुरान अरवी में पढ़ाया जाता था)

खैर ! किताव नाज़िल हुयी। अरवी में शव्दों का तर्जुमा हुआ। कैसे? जाने दो। मतलव तो ज़ालिकल किताव और उसके विज्ञान से है।

अल्लाह का दावा है---न---न---न ज़ालिकल किताव वाले अल्लाह का, कि इसकी भाषा अरवी यूँ रखी, जिससे लोगों को समझने की सहूलियत हो। अतः हमारी शंका है, आक्षेप नहीं, जव भाषा अरवी है, जो कुर्आन के नाज़िल होने से पूर्व थी, तो उसके शब्दों के अर्थ भी वही होंगे, जो पहले से प्रचलित थे। जव शब्द-अर्थ वही हैं, तो जिन शब्दों से आजकल के कुरआन वेत्ता, विज्ञान दर्शा रहे हैं तो कुरआन के उतरने से पूर्व के लोग इन शब्दों से वो विज्ञान क्यों नहीं समझ पाए? और अगर शब्द वही है किन्तु कुर्आन के नाज़िल होने के वाद अर्थ वदले तो फिर अरवी में नाज़िल होना फ़ुज़ूल हुआ। क्योंकि अर्थ वदलते ही भाव वदले, भाषा का स्वरूप वदला तथा उसके सर्फ (व्याकरण) के नियम भी वदले और जव ये सव हुआ तो, इसका व्यौरा किसने रखा, किसने प्रचारित किया, कातिव कौन था---? अनेक दार्शनिक प्रश्न खड़े होते हैं, कुरान वाले, तो गैव का कहकर पिण्ड छुड़ा लेंगे, पर अन्यों का क्या?

अल्लाह भी दो हैं–एक जो कुर्आन का लिखने वाला तथा एक वो जो मूल अल्लाह है–

(८) "ये अल्लाह की सच्ची आयतें हैं जो हम तुम्हें (सोद्देश्य) सुना रहे हैं और निश्चय ही तुम उन लोगों में से हो, जो रसूल वनाकर भेजे गए हैं।" (सूरत अल वकर–२, आयत–२५२)

(९) "तुम्हारे रव की कसम! हम अवश्य ही उन सवके विषय में पूछेंगे जो कुछ वे करते रहे।" (सूरत अलहिज्र–१५, आयत ९२-९३)

(१०) "अल्लाह की सौगंध ! हम तुमसे पहले भी कितने ही समुदायों की ओर रसूल भेज चुके हैं।

(सूरत अन्-नहल १६, आयत ६)

(११) "अतः कुछ नहीं, मैं कसम खाता हूँ पूर्वों और पश्चिमों के रव की, हमें इसकी सामर्थ्य प्राप्त है कि उनकी जगह उनसे अच्छे ले आएँ और हम पिछड़ जाने वाले नहीं हैं।"

(सूरत अल-मआरिज ७०, आयत ४०-४१)

कुछ और भी आयातें हैं, जो इसी प्रकार के अर्थ देती है, जिससे दो अल्लाहों का आभास होता है। कुरान तो तौहीद (एक अल्लाह) की

बात करता है, अब इन दो अल्लाहों वाली आयतों का क्या?

चलिए! गैब की बात है, अल्लाह जानें! शायद! कयामत के रोज़ राज-फाश हों ....?

कुरान अरबी में उतारा, हमें कोई आपत्ति नहीं। परन्तु! हम देखकर दंग हैं कि कुरान के पुराने आलिमों में, हज़रत मुहम्मद की सीरत लिखने वालों में, तफसीरों में, इस बात पर विवाद है कि कौन-सा शब्द अरबी का है और कौन-सा नहीं—जैसे—अल-फुरकान (कुरान का पर्यायवाची) को लेकर विवाद है। ऐसे ही कुरान स्वयं कहती है—

(१२) "ऐ इमान लाने वालो! 'राइना' न कहा करो बल्कि 'उनज़ुरना' कहा करो और सुना करो।" (सूरत अल-बकरा, २—आयत १०४)

(नोट—'राइना'—इबरानी और अरबी दोनों भाषाओं में है, किन्तु अर्थों के विषय में विवाद है। हमारी उपरोक्त शंका कि कुरान ने कहीं शब्द-अर्थ के मूल को तो नहीं बदला, अकारण नहीं। विस्तृत चर्चा कभी और करेंगे)

अल्लाह ! कार-साज़ है कुछ भी हो सकता। विवाद या शंका यहाँ सम्भव नहीं, ईमान अनदेखे लाना है—

(१३) "जो अनदेखे ईमान लाते हैं"

(सूरत अल बकर २, आयत २)

सो हम अपनी बात को मुद्दे पर लाते हैं, बात कुर्आन के विज्ञान की करते हैं, संक्षेप में, शेष विद्वान् लोग विस्तार कर लेंगे—

(१४) "वही है जिसने आकाशों और धरती को ६ दिनों में पैदा किया—उसका सिंहासन पानी पर था।" (सूरत हूद—११, आयत—७)

(१५) "निस्संदेह तुम्हारा रब वही अल्लाह है जिसने आकाशों और धरती को छह दिन में पैदा किया—फिर राजसिंहासन पर विराजमान हुआ। वह रात को दिन पर ढांकता है जो तेजी से उसका पीछा करने में सक्रिय है और सूर्य, चन्द्रमा और तारे भी बनाए इस प्रकार कि वे उसके आदेश से काम में लगे हुए हैं।"

(सूरत यूनुस १०, आयत ५)

(१६) "फिर उसने आकाश की ओर रुख किया, जबकि, वह मात्र धुआँ था और उसने उससे और धरती से कहा आओ, स्वेच्छा के साथ

या अनिच्छा के साथ। उन्होंने कहा हम स्वेच्छा के साथ आए।"

(सूरत फुसिलत–४१, आयत–११)

(१७) "क्या उन लोगों ने जिन्होंने इन्कार किया, देखा नहीं कि ये आकश और धरती बन्द थे। फिर हमने उन्हें खोल दिया और हमने पानी से हर जीवित चीज बनाई, तो क्या वे मानते नहीं?"

(सूरत अल-अंबिया–२१, आयत ३०)

कुर्आन में ऐसी भी आयत आती है जो बताती है कि अल्लाह सृष्टि का निर्माण करके, ऊपर चढ़कर अर्श पर, अपनी कुर्सी (सिंहासन) पर बैठता है। इस कारण कुर्सी और अर्श में कौन बड़ा है। ऐसा विवाद कुरान की तफसीरों में मिलता है। परन्तु कुरान के अल्लाह को इस बात की परवाह नहीं कि वो अर्श या कुर्सी दोनों से छोटा सिद्ध हुआ, अतः उसके निन्यानवें नामों की सार्थकता क्या?

प्रमाण सं. १४ व १७ से स्पष्ट है कि सृष्टि से पूर्व अल्लाह की कुर्सी पानी पर थी और पानी से हर जीवित चीज बनाई। अब प्रश्न उठता है कि ये पानी बाईबल वाला पानी है अथवा पंचतत्वों वाला पानी है? कुर्सी अथवा सिंहासन पानी पर था तो पानी कहाँ था?

(नोट–पंचतत्व वैदिक दर्शन के सन्दर्भ में समझें)

कुन-फयकुन की तकनीक होते हुए भी ६ दिन या ६ काल, बात समझ में कम आती है। किन्तु अल्लाह कार साज़ है, कोई नुक्ता-चीनी नहीं।

आकाश धुआँ था पृथ्वी और आकाश साथ थे, दोनों को अलग किया, उससे पहले आकाशों और धरती का निर्माण किया, परन्तु साथ! समस्या दार्शनिक है, पहले साथ क्यों बनाया, फिर अलग क्यों किया? जहाँ पहले आकाश और पृथ्वी थे वहाँ उनके अलग होने के बाद क्या है, आकाश का धुआं किस तत्त्व का बना है, पृथ्वी किस तत्त्व की बनी है? क्या आकाश अब भी धुँए का बना है या ठोस है, क्योंकि अर्श ओर अल्लाह व कुर्सी आकाश पर है, शायद पानी पर---?

(१८) "अबू हुरैयाह से रवायत हैं–रसूल ने कहा "अल्लाह का दाहिना हाथ भरा हुआ है तथा रात और दिन के लगातार व्यय के बाद भी उसमें कोई कमी नहीं आती। क्या तुम नहीं देखते उसने

कितना खर्च किया है, जब से उसने जमीन और आसमान बनाये। किन्तु उसके दाहिने हाथ की वस्तु में कोई कमी नहीं आयी। उसकी कुर्सी (सिंहासन) पानी पर है और उसके दूसरे हाथ में वो करामात है जो मृत्यु लाती है, वो कुछ को जिलाता है और कुछ को मारता है"

(सही बुखारी, हदीस ६/७४/६)

(१६) "अल्लाह वह है जिसने आकाशों को बिना सहारे के ऊँचा बनाया जैसा कि तुम उन्हें देखते हो। फिर वह सिंहासन पर आसीन हुआ। उसने सूर्य्य और चन्द्रमा को काम पर लगाया।"

(सूरत, अर-रअ्द—१३, आयत २)

(२०) "और वही है, जिसने धरती को फैलाया———।"

(सूरत-अर-रअ्द—१३, आयत ३)

(२१) "यदि हम उन पर आकाश से कोई द्वार खोल दें और वे दिन-दहाड़े उसमें चढ़ने भी लगे———।"

(सूरत अल-हिज्र १५, आयत—१४)

(२२) "और हमने धरती को फैलाया ओर उसमें अटल पहाड़ डाल दिए———।" (सूरज अल-हिज्र १५, आयत—१६)

(२३) "और उसने धरती में अटल पहाड़ डाल दिए कि वह तुम्हें लेकर झुक न पड़े।" (सूरत अन्-नहल् १६, आयत १५)

(२४) "वही है जिसने तुम्हारे लिए धरती को पालना (बिछौना) बनाया———।" (सूरत ता०हा०-२०, आयत ५३)

(२५) "और हमने धरती में अटल पहाड़ रख दिए, ताकि कहीं ऐसा न हो कि वह उन्हें लेकर ढुलक जाए———।"

(सूरत अल-अंबिया २१, आयत ३१)

(२६) "और हमने आकाश को एक सुरक्षित छत बनाया कि—।"

(सूरत अल-अंबिया २२, आयत ३२)

(२७) "और उसने आकाश को धरती पर गिरने से रोक रखा है।"

(सूरत अल-हज २२, आयत ६५)

(२८) "और आकाश से—उसमें जो ओलों के पहाड़ हैं—ओले बरसाता है———।" (सूरत अन-नूर २४, आयत ४३)

(इस आयत का अर्थ भारत में प्रचारित आधुनिक भाष्यकारों से अस्पष्ट था, अतः तफसीर अल-तिवारी से इसका अर्थ स्पष्ट किया)

(२६) "उसने आकाशों को पैदा किया, (जो थमे हुए हैं) बिना ऐसे स्तम्भों के जो तुम्हें दिखाई दें और उसने धरती पर पहाड़ डाल दिए कि ऐसा न हो कि तुम्हें लेकर डाँवाडोल हो जाए.........।"

(सूरत लुकमान ३१, आयत १०)

(३०) "अल्लाह है जिसने तुम्हारे लिए धरती को ठहरने का स्थान बनाया और आकाश को भवन रूप में बनाया।"

(सूरत अल-मोमिन ४०, आयत ६४)

(३१) "आकाश को हमने अपने हाथ के बल से बनाया है और हम बड़ी समाई रखने वाले हैं।".........और धरती को हमने बिछाया, तो हम क्या खूब बिछाने वाले हैं।"

(सूरत अज़-ज़ारियात ५१, आयत ४७, ४८)

(३२) "यदि वे आकाश का कोई टुकड़ा गिरता हुआ देखें तो कहेंगे—"यह तो परत पर परत बादल है।"

(सूरत अत-तूर-५२, आयत ४४)

(३३) "जब आकाश फट जाएगा और लाल चमड़े की तरह लाल हो जाएगा.........।" (सूरत अर रहमान ५५ आयत ३७)

(३४) "और आकाश खोल दिया जाएगा, तो द्वार ही द्वार हो जाएँगें।

(सूरत अन नबा ७८, आयत १६)

(३५) "और जब आकाश की खाल उतार दी जाएगी।"

(सूरत अत तकवीर-८१, आयत ४)

(३६) "क्या तुम नहीं देखते अल्लाह ने क्योंकर सात आसमान बनाए एक पर एक। उनमें चाँद को रोशन किया और सूरज को चिराग

(सूरत नूहिनू-७, आयत १५-१६)

आकाश को वैदिक सिद्धान्त के अनुसार अवकाश माना गया है, महर्षि दयानन्द भी यही मानते हैं। आधुनिक वैज्ञानिक भी इसकी "Vaccum-Space" संज्ञा करते हैं। अब कुर्आन का रचियता 'अल्लाह' आकाश को क्या मानता है, उपरोक्त सन्दर्भों से सुस्पष्ट है। पृथ्वी के

ऊपर पहाड़ क्यों है इसका भी खुलासा कुर्आन करती है। आश्चर्यजनक तथ्य ये है कि पृथ्वी को फैलाने की क्रिया अल्लाह अपने दोनों हाथों से कर रहा है, जैसे चटाई अर्थात् पृथ्वी चपटी है। आकाश में ओलों के पहाड़ यानि विज्ञान की गत!

हमारे कुछ मुस्लिम भाईयों का मत है कि कुर्आन में पृथ्वी चपटी है, ऐसा कहीं नहीं लिखा है। हमारा उनसे प्रश्न है, पृथ्वी गोल है ऐसा कहाँ लिखा है? कुर्आन तो जाहलियत को खत्म करने के लिए नाज़िल हुयी तो, जाहलियत की इस बात का निराकरण क्यों नहीं? हम कुछ प्रमाण देकर शेष निर्णय विज्ञ पाठकों पर छोड़ते हैं।

(३७) "और तुम सूर्य्य को उसके उदित होते समय देखते तो दिखाई देता कि वह उनकी गुफा से दाहिनी ओर को बचकर निकल जाता है और जब अस्त होता है तो उनकी बांई ओर से कतराकर निकल जाता है।

(सूरत, अल-कहफ्-१८, आयत १७)

(३८) "यहाँ तक कि वह सूर्यास्त-स्थल तक पहुँचा तो उसे मटमैले काले पानी के स्रोत में डूबते हुए पाया और उसके निकट उसे एक कौम मिली।" (सूरत अल-कहफ्-१८, आयत ८६)

(३९) "यहाँ तक कि जब वह सूर्योदय स्थल पर पहुँचा तो उसने उसे ऐसे लोगों पर उदित होते पाया, जिनके लिए हमने सूर्य के मुकाबले कोई ओट नहीं रखी थी।" (सूरत, अल-कहफ्-१८, आयत-९०)

सूरज का दायें-बायें बचकर चलना, सूर्यास्त स्थल तथा सूर्योदय स्थल नामी स्थान विशेष होना, सूर्योदय स्थल व सूर्यास्त स्थल पर आबादी का होना, क्या दर्शाता है? कुर्आन-वेत्ता बतावें? गोल पृथ्वी पर यह सम्भव नहीं?

कुर्आन और खगोल विद्या

(४०) "वही है जिसने सूर्य्य को सर्वथा दीप्ति और चन्द्रमा[1] को प्रकाश बनाया और उनके लिए मंजिलें निश्चित कीं, ताकि तुम वर्षों

---

[1]प्रमाण सं० ३९ व ४० से स्पष्ट है कि कुरानकार चाँद का अपना प्रकाश मानता है।

की गिनती और हिसाब मालूम कर लिया करो।"

(सूरत युनुस १०, आयत-५)

(४१) "और सूर्य्य और चन्द्रमा को तुम्हारे लिए कार्यरत किया कि एक नियत विधान के अधीन निरन्तर गतिशील है और रात और दिन को भी तुम्हें लाभ पहुँचाने में लगा रखा है।"

(सूरत इबराहीम-१४, आयत ३३)

(४२) "हमने आकाश में बुर्ज (तारा-समूह) बनाए और हमने उसे देखने वालों के लिए सुसज्जित भी किया।"

(सूरत अल हिज्र-१५, आयत १६)

(४३) "और फिटकारे हुए शैतान से सुरक्षित रखा……।"

(सूरत अलहिज़-१५, आयत १७)

(४४) "यह और बात है कि किसी ने चोरी-छिपे कुछ सुनगुन लिया तो एक प्रत्यक्ष अग्निशिखा ने भी झपटकर उसका पीछा किया……"

(सूरज अलहिज्र-१६ आयत १८)

(४५) "हमने दुनिया के आकाश की सजावट अर्थात् तारों से सुसज्जित किया और प्रत्येक सरकश शैतान से सुरक्षित रखने के लिए वे "मलए आला[१] की ओर कान नहीं लगा पाते और हर ओर से फैंक मारे जाते हैं, भागने धुतकारने के लिए। किन्तु यह और बात है कि कोई कुछ उचक ले, इस दशा में एक तेज दहकती उल्का उसका पीछा करती है।" (सूरत अस-साफ़्फ़ात-३७, आयत ६-१०)

(४६) "हमने निकटवर्ती आकाश को दीपों से सजाया और उन्हें शैतानों के मार भगाने का साधन बनाया और उनके ………।

(सूरत अल-मुल्क-६७, आयत ५)

(४७) "अबू क़तादाह से रवायत है, अल्लाह का कोल है–"

"(देखें प्रमाणः स०, ४६)" – इन तारों की सृष्टि तीन कार्यों के लिए है। (१) सजावट के लिए (२) शैतान और जिन्न को मार भगाने के लिए (३) राहगीरों को रास्ता दिखाने के लिए। "और जो इससे अलहैदा मतलब निकालता है वो गुमराह है वक्त बरबाद करता है और

[१]नोट–मलाए आला का अर्थ फरिश्ते होता है।

अपनी औकत से ज्यादा वढ़ रहा है।''

(सही बुखारी सृष्टि उत्पत्ति के आरम्भ की किताब अध्याय (वाब) ३)

तारों का कार्य, उनकी उपयोगिता, उनका विज्ञान वाह! कुरान! क्या यही है अल्लाह का विज्ञान?

(४८) ''वही है जिसने रात और दिन बनाए और सूर्य्य और चन्द्र भी। प्रत्येक अपने-अपने कक्षा में तैर रहा है।''

(सूरत अल-अंबिया-२१ आयत-३३)

(४६) ''अल्लाह ही रात-दिन का उलट-फेर करता है।''

(सूरत अन-नूर २५ आयत ४४)

(५०) ''वही है जिसने रात और दिन को एक-दूसरे के पीछे आने वाला वनाया।'' (सूरत अलः फुरकान २५ आयत ६२)

(५१) ''और उनके लिए एक निशानी रात है। हम उस पर से दिन को खींच लेते हैं। तभी वह अंधेरे में हैं और सूरज चलता है। अपने एक ठहराव के लिए यह हुक्म है। जबरदस्त इल्म वालों का और चाँद के लिए हमने मंजिलें मुकर्रर की यहाँ तक कि फिर हो गया जैसे खजूर की पुरानी डाल।[1]'' (सूरत यासीन ३६ आयत ३७-३६)

(५२) ''साक्षी है सूर्य्य और उसकी प्रभा और चन्द्रमा जबकि वह उसके पीछे आए।'' (सूरत अश-शम्स ६१, आयत १-२)

(५३) ''न सूर्य्य ही से हो सकता है कि चाँद को जा पकड़े और न रात-दिन से आगे वढ़ सकती है। सब एक-एक कक्षा में तैर रहे हैं।'' (सूरत यासीन ३६ आयत-४०)

प्रमाण ५२ और ५३ से स्पष्ट है। सूर्य्य और चन्द्रम आगे-पीछे एक घेरे में तैर रहे हैं जहाँ उनकी गति इस प्रकार है कि वो एक-दूसरे को न पकड़ सकें। किन्तु रात और दिन का कक्षा में तैरना समझ से बाहर है पर कुर्आन के विज्ञानुसार सम्भव है। क्योंकि रात और दिन का निर्माण होता है, सूर्य्य और चन्द्र का भी, तभी रात और दिन को कपड़े की भांति खींचा जा सकता है। (देखें प्रमाण स० ४८ से ५३)

एक प्रश्न स्वतः उठता है—सूर्य्य, चन्द्र, रात और दिन किसके प्रति तैर रहे हैं? क्या अन्य लोक भी कक्षा में तैरते हैं? ज़ाहालियत में लोग

[1]नोट—चाँद खजूर की डाल जैसा क्यों हुआ, कुरान में कोई उत्तर नहीं।

मानते हैं कि ये सब पृथ्वी के प्रति घूमते हैं। कुआन क्या मानता है? पृथ्वी के कक्षा में तैरने का कुरान में क्या प्रमाण है, इन सब लोकों के अपनी परिधि में घूमने का क्या प्रमाण है, कोई कुरान-वेत्ता बताए? रात, दिन क्यों होते हैं, क्या कपड़े की मानिंद खींचने से? वाह विज्ञान!

(५४) "तुमसे नए चाँद को पूछते हैं, तुम फरमा दो, वह वक्त की अलामतें हैं, लोगों के हज के लिए।"

(सूरत बकर २, आयत-१८६)

"शानें नजूल-(संक्षेप में) रसूललिल्लाह चाँद का क्या हाल है। इब्तेदा में बहुत बारीक निकलता है ऐसा फिर रोज़ व रोज बढ़ता है। यहाँ तक कि पूरा रौशन हो जाता है। फिर घटने लगता है।

(नोट-उत्तर उपरोक्त आयत, प्रमाण ५४ में देखें)

आश्चर्य प्रश्न क्या, उत्तर क्या! क्या यही खगोल विद्या का दम्भ भरते हैं कुआन वाले, किन्तु क्या करें .... !

(५५) "दोनों पूरब का रब और दोनों पश्चिम का रब"

(सूरतुर रहमानि-५५ आयत १७)

जब कुआन दो पूरब और पश्चिम को मानता है और उसका रब भी इन्हीं दो पर अधिकार रखता है तो शेष का ज्ञान कहाँ से होगा। यही कारण है कि कुआन में जड़ लोक भी चेतन माने गए हैं-

(५६) "क्या तुमने देखा कि अल्लाह के लिए सज्दा करते हैं वह जो आसमानों और जमीन में हैं और सूरज और चाँद और तारे और पहाड़ दरख्त और चौपाए।" (सूरतुल हज-२२, आयत १८)

(५७) "याद करो जब यूसुफ ने अपने बाप से कहा-ऐ मेरे बाप मैंने ग्यारह तारे और सूरज और चाँद देखें उन्हें अपने लिए सज्दा करते देखा।" (सूरतुयूसुफ-१२, आयत ४)

भ्राता अनवर जी ! ये कुछ कुरान के विज्ञान की बानगी हमने आपके समक्ष रखी। क्या इस विज्ञान के आधार पर कुरान को किताबुल्लाह कहते हो, क्या कोई बुद्धिजीवी व्यक्ति इसको अल्लाह का कलम कह सकता है। क्या कुरान के अल्लाह को पोल खुलने का डर था जो कह बैठा-

(५८) "यदि हम उसे गैर अरवी कुरआन बनाते तो वे कहते कि "उसकी आयतें क्यों नहीं (हमारी भाषा में) खोलकर बयान की गई? यह क्या कि वाणी तो गैर अरवी है और व्यक्ति अरबी?" कहो "वह उन लोगों के लिए जो ईमान लाए मार्गदर्शन और आरोग्य हैं, किन्तु जो लोग ईमान नहीं ला रहे हैं उनके कानों में बोझ हैं, वह (कुरआन) उनके लिए अन्धापन (सिद्ध हो रहा) है वे ऐसे हैं, जिनको किसी दूर के स्थान से पुकारा जा रहा हो"

(सूरत–हा०मीम० अर-सज्दा-४१ आयत-४४)

कुरआन स्वयं में दावा करती है कि वो लोगों की भाषा में आसान कर दी गयी है (द्रष्टव्य प्रमाण सं० ३ से ७) जिससे समझने में आसानी हो। इसमें हमें क्या आपत्ति, किन्तु कुरान में आए हुरूफे मुक्तआ के क्या अर्थ हैं रसूलल्लिलहा भी नहीं समझा पाए फिर भाष्यकारों की हैसियत ही क्या। ऐसे में कुरआन का दावा क्या मायने रखता है समझ से परे है।

कुरआन की संक्षिप्त विवेचन का समापन करें, उससे पहले एक छोटी-सी शंका है पूछ लेते हैं, शायद अगले जन्म में मौका न मिले। पता नहीं ब्रह्माण्ड के किस भाग में, कौन-सी पृथ्वी पर, किस योनि में हम और आप हों। आत्मा तो अनादि है यथा उसके कर्म भी प्रवाह से अनादि हैं। कर्मों का अभाव कभी नहीं होता। अतः पूछ लेते हैं—

प्रश्न (क)–(१) "इकरअ विइस्में रब्विका अल्लज़ी खलका"

(पढ़ो अपने रब के नाम के साथ जिसने पैदा किया)

(सूरत-अल-अलक-६६ आयत १)

यह पहली आयत उतरी थी उन प्रथम पांच आयतों में जो सूरत अल-अलक का भाग हैं किन्तु कुर्आन का प्रारम्भ –

(२) "विस्मिल्लाहिर्रहानिर्रहीम"–शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो कृपाशील, अत्यन्त दयावान है। (सूरत अल-फातिहा-१)

÷ से होता है। ये विइस्में रब्विका का विस्मिल्लाह में परिवर्तन कैसे हो गया ?

प्रश्न (ख)–अगर वर्तमान कुरआन का प्रारम्भ सूरत अल फातिहा से है तो कुरान का पहला पारा सूरा, अल-वकरा-२, से क्यों होता है। सूरे

फातिहा से क्यों नहीं?

प्रश्न (ग)–(३) "जिसने (अल्लाह) कलम के द्वारा शिक्षा दी।"

(सूरत अल-अलक० ६६-४)

(४) "मनुष्य को यह ज्ञान प्रदान किया जिसे वह न जानता था।"

(सूरत अल-अलक-६६ आयत ५)

यहाँ कलम से अल्लाह से किसे सिखाया और कौन-सा ज्ञान दिया, कौन इस वाक्य से मुराद है?

किताबुल्लाह पर ज्यादा शंकाए ठीक नहीं अतः यहीं पर बस। शेष सुधी जनों पर, विज्ञ पाठकों पर कि वो कुरआन को क्या मानें? हम तो स्मृति ग्रन्थ मानते हैं, जो वक्त के साथ बदला जाना आवश्यक है, क्योंकि यह धर्म का बाह्य रूप है और बाह्य रूप, बाह्य परिस्थितियों से प्रभावित होता है, जो समय देश-कालानुसार बदलती है। किन्तु वेद, धर्म का आन्तरिक रूप है, श्रुति है, ईश्वर की कल्याणी वाणी है, सनातन है अर्थात् पुरातन व नूतन दोनों है अतः कलामुर्रहमान केवल वेद है।

महर्षि दयानन्द क्या थे?

अनवर जी को आपत्ति है कि आर्यसमाजी महर्षि दयानन्द को ऋषि मानते हैं, जबकि महर्षि दयानन्द स्वयं को ऋषि कहलाने का अधिकारी नहीं मानते थे। अनवर जी! प्रत्येक व्यक्ति अपनी राय बनाने में स्वतन्त्र है, किन्तु आपने कभी पढ़ा कि महर्षि जब ईश्वर की उपासना करते थे, तो स्वयं को क्या कहते थे–"(वायो ते ब्रह्मणे नमोऽस्तु)............(ऋतं वदिष्यामि) जो आपकी वेदस्थ यथार्थ आज्ञा है उसी का मैं सबके लिए उपदेश और आचरण भी करूँगा। (सत्यं वदिष्यामि) सत्य बोलूँ और सत्य ही करूँगा। (तन्मामवतु) सो आप मुझ **आप्त सत्यवक्ता** की रक्षा कीजिए ...."

(सत्यार्थप्रकाश प्रथम समुल्लास)

"जब हम विद्वानों से पढ़े तभी कर्त्तव्याकर्त्तव्य और धर्माधर्म को समझने लगे।"

(सत्यार्थप्रकाश एकादश समुल्लास स्वाभाविक ज्ञान विषय)

विश्लेषण अपेक्षित नहीं, आपके अनर्गल आरोप, द्वेष-बुद्धिजनित हैं। उपरोक्त प्रसंग इसका प्रमाण है।

(१) **ऋषिणां मन्त्रदृष्टयः।** (निरुक्त ७/३)

(२) ईश्वर जिस समय आदिसृष्टि में वेदों का प्रकाश कर चुका, तभी से प्राचीन ऋषि लोग वेदमन्त्रों के अर्थों का विचार करने लगे। .....अर्थ को ठीक जानके उसी के अनुसार व्यवहारों में प्रवृत्त होना, वाणी का फल है और जो लोग इस नियम पर चलते हैं, वे साक्षात् धर्मात्मा अर्थात् 'ऋषि' कहलाते हैं। इसलिए जिन्होंने सब विद्याओं को यथावत् जाना था, वे ही ऋषि हुए थे। उन्होंने अपने उपदेश से अवर अर्थात् अल्प बुद्धि मनुष्यों को वेदमन्त्रों के अर्थों का प्रकाश कर दिया है।'

(ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका-प्रश्नोत्तरविषय)

(३) **तेभ्य एतं तर्कमृषिं** (निरु अ० १३/१२)

(४) **''तर्क का नाम ऋषि होने से''**

(५) ''इसलिए सब आर्य्य विद्वानों का सिद्धान्त है कि प्रत्यक्षादि प्रमाणों से युक्त जो तर्क है, वही मनुष्यों के लिए 'ऋषि' है।''

(प्रमाण स० ४.५ ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका-वेदविषय-विचार)

महर्षि दयानन्द, ऋषि क्यों हैं, सुस्पष्ट है, विवेचना अनावश्यक है 'प्रत्यक्षं किम् प्रमाणं''।

अन्त में हम यही कहेंगे –

''अर्थी दोषं न पश्यति''–स्वार्थी लोग अपने स्वार्थ सिद्धि करने में दुष्ट कामों को भी श्रेष्ठ मान दोष नहीं देखते हैं।

आप इस प्रवृत्ति से बहार आएँ, हम असत्य के, अनृता के परित्याग को सदैव तत्पर हैं। महर्षि का भी यही आदेश। किन्तु क्या आप ?

''न कोहे तूर को हिलाया न शब्बे कद्र की रात में जगाया,
वेद के प्रकाश से ऋषियों का हृदय जगमगाया।
ऐसे वेद का नूर मेरा ऋषिवर सब के लिए लाया,
तभी तो मूल शंकर, ऋषि दयानन्द कहलाया।।
वेद की ठंडी छ44ांव, ज्ञान पिपासुओं को आत्मिक सुख दे!!

।। इति। ओ३म् शम्।।

निवेदक
''अग्निदग्ध''
(राजवीर आर्य)

आर्य समाज के नियम

1. सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं, उन सबका आदिमूल परमेश्वर है।
2. ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करने योग्य है।
3. वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना, सुनना-सुनाना आर्यों का परम धर्म है।
4. सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।
5. सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार कर करने चाहिए।
6. संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।
7. सबसे प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य वर्तना चाहिए।
8. अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।
9. प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में सन्तुष्ट न रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।
10. सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतंत्र रहें।